हिन्दी प्रचार समाचार

स्थापना : 1918

सभा के संस्थापक : महात्मा गांधी

वर्ष : 87, अंक : 10
अक्टूबर 2023

वार्षिक चंदा : ₹ 100/-
एक प्रति का मूल्य : ₹ 8/-

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

गांधी जयंती और स्वच्छ भारत दिवस : 02 अक्टूबर, 2023

हिन्दी प्रचार समाचार

(राष्ट्रीय महत्व की संस्था, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का मुख पत्र)

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

(संसदीय अधिनियम 14 सन् 1964 द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व की संस्था)

वर्ष : 87 अंक : 10 | **अक्टूबर 2023**

संपादकीय

✦ मैं गाँधी बोल रहा हूँ... 04

धरोहर

✦ गाँधी जी का आध्यात्मिक प्रभुत्व — गिलबर्ट मरे — 07

आलेख

✦ गाँधी जयंती : 'हिंद स्वराज' — डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा — 22

कविता

✦ जीवन भर पढ़ो — एम. लावण्या — 15

✦ बापू जी — एम. कल्याणी — 17

✦ देवतुल्य माता-पिता — डॉ. दिलीप धींग — 18

✦ अ आ इ ई.... गाओ! — डॉ. प्रभु किंग — 19

कहानी

✦ अपना-पराया (लघुकथा) — हरिशंकर परसाई — 08

✦ पहचान (लघुकथा) — डॉ. सुपर्णा मुखर्जी — 16

मीडिया

✦ फोटो पत्रकारिता की प्रासंगिकता — ए. ईश्वरी, डॉ. शशिप्रभा जैन — 09

विविधा

✦ विस्मृति भी आवश्यक है... — तंगिराला जयराम — 14

भाषा विज्ञान

✦ संप्रेषण : समस्या और समाधान — विद्यानिवास मिश्र — 32

परीक्षोपयोगी

✦ रवींद्रनाथ ठाकुर की जीवनी — एच. कांतिमति — 17

✦ 'सूर्योदय' की पात्र परिकल्पना — आर. प्रिया — 20

✦ परिचय परीक्षा संबंधी सूचना — 24

✦ प्रश्न-पत्र — 25

गतिविधियाँ — 41

संपादक

जी. सेल्वराजन

सह संपादक

डॉ. जी. नीरजा

neerajagurramkonda@gmail.com

प्रमाणित प्रचारक चंदा

₹ : 100/-

संपादकीय कार्यालय

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

टी. नगर, चेन्नै - 600 017

संपर्क सूत्र : 044 - 24341824

044 - 24348640

Website : dbhpscentral.org

You Tube Channel :

DBHPS, Central Sabha Chennai

Email : dbhpssahithyach17@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।

संपादकीय ...

मैं गाँधी बोल रहा हूँ....

अहिंसा प्रचंड शस्त्र है। इसमें परम पुरुषार्थ है। यह भीरु से दूर-दूर भागती है, वीर पुरुष की शोभा है, उसका सर्वस्व है! यह शुष्क, नीरस, जड़ पदार्थ नहीं है, यह चेतनमय है। यह आत्मा का विशेष गुण है। आप मानो या न मानो, मैंने इसका वर्णन परम धर्म के रूप में किया है। इसे अपनाकर तो देखिए ज़रा। मैं इस भारत को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद करना चाहता हूँ। शक्तिशाली करना चाहता हूँ। मैं इस धरती पर ईश्वर का राज चाहता हूँ। एक ऐसे रामराज्य की स्थापना करना चाहता हूँ जिससे मेरे देशवासी आराम से जीवन यापन कर सकें। मैं यही चाहता हूँ कि मेरे देश के सभी नागरिक आरामदायक ज़िंदगी व्यतीत करें। आप सोच रहे होंगे कि मैं कौन हूँ! तो सुनिए, मुझे सब महात्मा कहकर पुकारते हैं। बच्चे मुझे प्यार से बापू कहते हैं। माता-पिता ने तो मुझे मोहनदास का नाम दिया। परिवार वाले प्यार से 'मोहनिया' बुलाते हैं। जाति के बनिये हैं। गाँधी का अर्थ 'मोदी' होता है, लेकिन हमारे पूर्वज तीन पीढ़ियों से बनिये का काम नहीं कर रहे हैं। काठियावाड़ के देशी राजाओं के यहाँ दीवान का काम करते आ रहे हैं।

2 अक्टूबर,1869 को मेरा जन्म गुजरात के पोरबंदर में हुआ। मेरे पिता हैं करमचंद उत्तमचंद गाँधी। सब लोग उन्हें काबा गाँधी कहकर पुकारते हैं। पिता जी ब्रिटिश राज्य में एक छोटी सी रियासत के दीवान हैं। मेरी माता पुतलीबाई भक्ति भाव युक्त गृहिणी हैं। 14 वर्ष में पदापर्पण करते ही कस्तूर बाई मकनजी से मेरा विवाह संपन्न हुआ। उनका नाम छोटा करके कस्तूरबा कर दिया गया। बाद में सब उन्हें 'बा' कहने लगे। हमारा यह विवाह एक तरह से बाल विवाह है, जो समाज में प्रचलित है। जीवन के 19 वें साल में मैं लंदन चला गया बैरिस्टर की पढ़ाई करने के लिए। समुद्र के पार जाना महापाप समझा जाता है। बैरिस्टर पढ़ने के लिए विलायत जाने के कारण मुझे जाति से बहिष्कृत कर दिया गया। जाने से पहले मैंने अपनी माँ को वचन दिया कि वहाँ जाने के बाद भी मैं माँस-मदिरा के सेवन से दूर रहूँगा। इस वचन को मैं आजीवन निभाता रहा। बैरिस्टर बाबू बनने के बाद मैं भरत लौट आया। लौट आने के बाद मुंबई में वकालत करने लगा, लेकिन कोई खास सफलता नहीं मिली। राजकोट में मुकदमे की अर्जियाँ लिखने लगा। लेकिन इसे भी छोड़ना पड़ा। 1893 में एक भारतीय फर्म से नेटाल दक्षिण अफ्रीका में एक वर्ष के करार पर वकालत करने स्वीकार किया। वह ब्रिटिश साम्राज्य का ही भाग था।

दक्षिण अफ्रीका के प्रवास ने मेरा जीवन बदल दिया। वहाँ जाने के बाद मुझे काले और गोरे के भेदभाव का सामना करना पड़ा। प्रथम श्रेणी की टिकट होने के बावजूद मुझे तीसरी श्रेणी में यात्रा करने के लिए मजबूर किया गया। जब मैंने इनकार किया तो मुझे

बेरहमी से ट्रेन से बाहर फेंका गया। इस तरह मुझे अनेक बार शिकार होना पड़ा। मेरे अंदर एक चिंगारी सुलगने लगी। दक्षिण अफ्रीका में मेरे देशवासियों के साथ हो रहे अन्याय को देखकर मेरा खून खौलने लगा। तब मैंने निश्चय किया कि इस शोषण के विरोध में आवाज उठाऊँगा। अपनी स्थिति के लिए प्रश्न करूँगा। अपने देशवासियों को सम्मान दिलाऊँगा।

1901 में मैं भारत लौट आया, लेकिन नेटाल के भारतीयों के कारण मुझे फिर से एक बार वहाँ जाना पड़ा। काले कानून (भारतीयों के लिए पंजीकरण करने वाला विधेयक) के संदर्भ में मुझे संघर्ष करना पड़ा। जून 1914 में उस कानून को वापस लिया गया। 1915 में मैं पुनः भारत लौटा आया। लौटने से पहले इंग्लैंड गया था। भारत लौटने के बाद शांतिनिकेतन, हरिद्वार, पूना, मुंबई, राजकोट और पोरबंदर में कुछ समय व्यतीत किया। 25 मई, 1915 को अहमदाबाद में सत्याग्रह आश्रम स्थापित किया। यहाँ किसी भी तरह का भेदभाव नहीं। सब लोग आपस में मिलजुलकर रहने लगे। हँसी-खुशी समय बिताने लगे, लेकिन जब यहाँ रहने के लिए एक अछूत परिवार आया तो मुझे और कस्तूरबा को अनेक तरह से कष्ट उठाने पड़े। लोगों ने अपनी असहमति व्यक्त की, लेकिन मैं उस परिवार को छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। आर्थिक सहायता बंद हो चुकी। भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं। मुझपर ऐसा संकट पहली बार नहीं आया था। हर बार अंतिम घड़ी में प्रभु ने मदद भेजी है।

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद मुझे श्री गोपालकृष्ण गोखले ने परिस्थितियों को दो वर्ष तक मार्गदर्शक के रूप में अवलोकन करने की सलाह दी, लेकिन देश की परिस्थितियों को देखकर मैं अपने आप को रोक नहीं सका। करता तो क्या करता। चंपारन, खेड़ा और अहमदाबाद के स्थानीय सत्याग्रहों में भाग लेने लगा। प्रथम महायुद्ध के बाद राष्ट्रीय नेताओं को यह आशा थी कि युद्ध में दिए गए सहयोग के लिए अंग्रेज शासन भारतीयों को नागरिक सुविधाएँ और अधिकार प्रदान करेगा, लेकिन इसके विपरीत भारत को मिला रोलट एक्ट और जलियाँवाला बाग कांड। यह सब देखकर मैं आंदोलित हो उठा। असहयोग आंदोलन आरंभ करने के लिए मजबूर हो गया। देशवासियों के मन से डर की भावना समाप्त हो चुकी थी। हर भारतवासी के मन में राष्ट्रीय प्रेम और आत्म सम्मान की भावनाएँ जाग चुकी थीं। मैंने इस आंदोलन को अहिंसा के बल पर शुरू किया था, लेकिन सब की आस्था इस अहिंसा पर नहीं थी। चोरी-चोरा नामक स्थान पर हिंसा-कांड हुए। मेरी आस्था टूटी। अनेक बार मुझे जेल भी जाना पड़ा। जेल से छूटने के बाद मैंने यह देखा कि हिंदू-मुस्लिम एक-दूसरे से लड़ रहे थे। सांप्रदायिक दंगों से मेरा मन आहत हो उठा। मैंने यह महसूस किया कि जब देशवासी आपस में एक नहीं होंगे तो हमें गुलामी से मुक्ति नहीं मिलेगी। इसके लिए तो पहले एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस हुई जो देश के कोने-कोने के लोगों को आपस में बाँध सके, एक सूत्र में पिरो सके। मैंने सब जगह पैदल ही यात्रा की और मुझे यह विश्वास हो गया कि हिंदी ही वह भाषा है जिसमें सब को जोड़ने की शक्ति है।

1917 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के भरूच अधिवेशन में मैंने यह प्रस्ताव रखा कि हिंदीतर प्रांतों में हिंदी के प्रचार को स्वतंत्रता आंदोलन के अंग के रूप में ही चलाया जाए। 1918 - इंदौर में हिंदी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन हुआ। उसमें मुझे सभापति चुना गया। मैंने अपने भाषण में यह कहा कि हिंदी को हमें व्यावहारिक रूप में अपनाना चाहिए। हमें ऐसा उद्योग करना चाहिए कि एक वर्ष में राजकीय सभाओं में, कांग्रेस में, प्रांतीय भाषाओं में और अन्य समाज और सम्मेलनों में अंग्रेजी का एक भी शब्द सुनाई नहीं पड़े। हम अंग्रेजी का व्यवहार बिल्कुल त्याग दें। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करें। हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए, क्योंकि मैं यही मानता हूँ कि हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है। दक्षिण में हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए उसी वर्ष मद्रास में दक्षिण भारत हिंदुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना हुई। 1927 तक इसका संचालन हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा ही होता रहा। 1927 में इसे दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा नाम से पंजीकृत किया गया।

21 दिसंबर, 1929 को जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन संपन्न हुआ। उसमें पूर्ण स्वराज का संकल्प लिया गया। 26 जनवरी, 1930 को पूर्ण स्वराज्य दिवस मनाया गया। 14 फरवरी, 1930 को साबरमती आश्रम में संपन्न बैठक में अवज्ञा आंदोलन करने का निश्चय किया गया। 12 मार्च, 1930 को मैंने अपने साथियों के साथ दांडी यात्रा शुरू की। 5 अप्रैल को नमक कानून भंग किया। 1931 में इंग्लैंड में संपन्न गोलमेज सम्मेलन में मैंने सभी वयस्कों के मताधिकार की माँग की। यह सम्मेलन एक ढकोसला सिद्ध हुआ। भारत लौटकर 1932 में मैंने सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया। अनेक बार मुझे जेल की यात्रा करनी पड़ी। मैंने अपने सपने को टूटते हुए देखा। 1939 में विश्व दूसरे महायुद्ध से ग्रस्त हो गया। मुझे यह आशा थी कि ब्रिटिश सरकार शीघ्र ही भारत को स्वतंत्र घोषित करेगी, लेकिन वायसराय की घोषणा से मेरी आशा टूट गई। क्रिप्स से बातचीत के बाद 8 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित हुआ। अनेक संघर्षों के बाद अंत में वह दिन आ ही गया -15 अगस्त, 1947। भारत स्वतंत्र हुआ। खुशी के स्थान पर सब के चेहरे पर मातम छा गया। भारत दो टुकड़ों में बँट गया - भारत और पाकिस्तान। मैंने भारत को सिर्फ और सिर्फ स्वतंत्र देखना नहीं चाहा। मैंने यही चाहा कि हिंदू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सब आपस में मिलजुलकर रहेंगे। लेकिन होनी को कौन टाल सकता है! मैंने जिस भारत का सपना देखा उसमें हिंसा, पक्षपात, भ्रष्टाचार, छुआछूत और अन्याय का कोई स्थान नहीं था। लेकिन मेरा स्वप्न कभी पूरा नहीं हो सका। 30 जनवरी, 1948। अलविदा दोस्तो!

गाँधी जी ने जिस रामराज्य को स्थापित करने का स्वप्न देखा, वह स्वप्न बनकर ही रह गया। भारत भले ही अंग्रेज शासन से मुक्त हुआ, लेकिन आपसी फूट और षड्यंत्रों के गिरफ्त में आज भी है। आज भी गाँधी जी का नेतृत्व भारत के लिए चाहिए।

(सह संपादक)

गाँधी जी का आध्यात्मिक प्रभुत्व

- गिलबर्ट मरे

जिस संसार में राष्ट्रों के शासक पाशविक शक्ति पर अधिक से अधिक भरोसा किए हुए हैं और राष्ट्रों के निवासी अपने जीवन अस्तित्व और आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ऐसे तरीकों पर भरोसा रखे हुए हैं, जिनमें कानून, व्यवस्था, सहृदयता के लिए तनिक भी गुंजाइश नहीं रही है, उसमें महात्मा गाँधी एकाकी खड़े दीख पड़ते हैं और उनका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक है। वह ऐसे राजा या शासक हैं, जिनका कहना लाखों मानते हैं। इसलिए नहीं कि वे उनसे डरते हैं, बल्कि इसलिए कि वे उन्हें प्यार करते हैं और न इसलिए कि उनके पास विपुल संपत्ति, गुप्तचर, पुलिस और मशीनगनें हैं, बल्कि इसलिए कि उनके पास ऐसा नैतिक प्रभाव है कि जब वह उससे काम लेने लगते हैं तब ऐसा प्रतीत होता है कि वह भौतिक संसार के सारे महत्व को धूल में मिला देंगे। मैं 'प्रतीत होता है,' इसलिए कहता हूँ कि भौतिक शक्ति के विरुद्ध उसका प्रयोग सहृदयता, सहानुभूति अथवा दया के बिना निरर्थक है। हमें अपने मोर्चों में केवल इसलिए विजय प्राप्त होती है कि यह अपने दुश्मन की अंतरात्मा में सोई हुई उस नैतिकता या मनुष्यता को जगाती है, जो ऐसा मानवीय तत्व है कि मनुष्य पशु बनने का कितना भी यत्न क्यों न करे, उसका पूरी तरह अंत नहीं कर सकता। बीस वर्ष पहले मैंने इसीसे गाँधी जी के बारे में लिखा था कि, "वह एक ऐसे युद्ध में लगे हुए हैं, जिसमें असहाय और निःशस्त्र आत्मिक शक्ति का भौतिक साधनों से अत्यधिक संपन्न लोगों के साथ मुक़ाबिला है। उस युद्ध का अंत हमें इस भय में दीख पड़ता है कि भौतिक साधनों से संपन्न लोग धीरे-धीरे युद्ध का एक-एक मोर्चा हारते जाते हैं और आत्मिक शक्ति की ओर झुकते चले जा रहे हैं।"

हम, निस्संदेह, यह नहीं मान सकते कि आत्मिक प्रभुता रखने वाले व्यक्ति का नेतृत्व सदा ही सही होता है। उसके दावों और कार्यों का समर्थन या प्रतिवाद सहसा प्रायः नहीं किया जा सकता। अंत में, उस प्रभुता का प्रयोग तो उन मानवों द्वारा ही होता है, जो साधारण मनुष्यों के समान भूलों से परे नहीं हैं और शक्ति-संपन्न होने पर जिनका स्वेच्छाचारियों के समान पतन होना संभव है। लेकिन नैतिकता के बल पर शासन करनेवालों, अथवा अन्य साधारण शासकों में भी गाँधी जी का अद्वितीय स्थान है। पहली बात तो यह है कि वह कोई आदेश या हुक्म नहीं देते। केवल अपील करते हैं, हमारी अंतरात्मा को संबोधन करते हैं। वह बताते हैं कि उनके पास सच्चाई क्या है; लेकिन उनकी उपेक्षा और निंदा नहीं करते, जो उनसे भिन्न क्षेत्र में सच्चाई की खोज करते हैं।

दूसरी बात यह है कि उनकी लड़ाई का तरीका अजीब और अनूठा है, जिसे कि उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में हिंदुस्तानियों के अधिकारों के लिए लगातर पंद्रह वर्ष तक लड़ी गई लड़ाई में खूब अच्छी तरह प्रकट कर दिया है। वह और उनके अनुयायी कई बार गिरफ्तार करके जेल भेजे गए, नैतिक अपराध करने वालों के साथ रखे गए और उनके साथ अमानुषिक व्यवहार किया गया। लेकिन जब भी कभी उनका दमन करने वाली सरकार कमजोर पड़ी या उस पर कोई संकट आया, अपनी बात को मनवाने एवं लाभ उठाने के बजाय उन्होंने अपना रुख बदल दिया और उसकी सहायता की। जब वह भीषण युद्ध की भयानक दलदल

में धँस गई, तब उसकी सहायता के लिए उन्होंने हिंदुस्तानी स्वयंसेवकों की सेवा खड़ी की। अपने अनुयायियों की अहिंसात्मक हड़ताल के जारी रहते हुए जब सरकार के लिए क्रांतिकारी लोगों की रेल्वे की संभावित हड़ताल का भय उपस्थित हुआ, तब उन्होंने सहसा अपने लोगों को काम शुरू करने की आज्ञा दे दी, जिससे उनके विरोधी निरापद ही जाएँ। इसमें आश्चर्य ही क्या कि अंत में उसकी विजय हुई। कोई भी सहृदय शत्रु इस तरीके की लड़ाई का सामना नहीं कर सकता।

तीसरी बात, जो कि संभवतः असंख्य लोगों के लिए आदर्श बने हुए उनके द्वारा पूजे जानेवालों के लिए सबसे अधिक कठोर है, वह यह है कि वह कभी भी निर्दोष या पवित्र होने का दावा नहीं करते। हमें पता है कि इस समय उन्होंने अपने असहयोग आंदोलन को रोका हुआ है, जिससे कि वह और उनके विरोधी आत्म-निरीक्षण तथा परीक्षण कर सकें।

एक निःशस्त्र व्यक्ति का करोड़ों मनुष्यों पर नैतिक प्रभाव स्वतः ही आश्चर्यजनक है। लेकिन जब वह न केवल अहिंसा के विरुद्ध शपथ लेता है, बल्कि अपने शत्रुओं तक की संकट में सहायता करता है और अपनी मानवीय कमजोरियों को भी स्वीकार करता है, तब वह निर्विवाद रूप से सारे संसार का श्रद्धा-भाजन बन जाता है। एक दूर देश में बैठे हुए, बिल्कुल भिन्न सभ्यता को मानते हुए, जीवन-संबंधी अनेक समस्याओं के बारे में उनसे सर्वदा विपरीत विचार रखते हुए, उस यूरोप के चिंतनशील तथा संघर्षमय विचारों में निमग्न रहते हुए भी, जिसमें मनुष्य का दिल और दिमाग पाशविक शक्ति और अज्ञान की चोट खाकर अपने को कुछ समय के लिए असहाय-सा अनुभव कर रहा है, मैं बहुत खुशी के साथ इस महापुरुष को 'महात्मा गाँधी' के उस शुभ नाम से पुकारता हूँ, जिसका कि उसके भक्त उसके लिए दावा करते हैं और बड़ी श्रद्धा के साथ उसका उच्चारण करते हैं। **(साभार : महात्मा गाँधी : अभिनंदन ग्रंथ, (सं) सर्वेपल्ली राधाकृष्णन)**

लघुकथा

अपना-पराया

- हरिशंकर परसाई

'आप किस स्कूल में शिक्षक हैं?'

'मैं लोकहितकारी विद्यालय में हूँ। क्यों, कुछ काम है क्या?

'हाँ, मेरे लड़के को स्कूल में भरती करना है।'

'तो हमारे स्कूल में ही भरती करा दीजिए।'

'पढ़ाई-बढ़ाई कैसे है?'

'नंबर वन! बहुत अच्छे शिक्षक हैं। बहुत अच्छा वातावरण है। बहुत अच्छा स्कूल है।'

'आपका बच्चा भी वहाँ पढ़ता होगा?'

'जी नहीं, मेरा बच्चा तो 'आदर्श विद्यालय' में पढ़ता है।'

(साभार : गद्य कोश)

फोटो पत्रकारिता की प्रासंगिकता

- ए. ईश्वरी, डॉ. शशिप्रभा जैन

भारत में फोटो पत्रकारिता : भारत में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में समाचारों को रेखाचित्र और फोटो की सहायता से प्रकाशित करना कब से शुरू हुआ, इसके बारे में निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता है। हमारे देश में पहले-पहल मुद्रण प्रेस पुर्तगालियों ने सन् 1550 में स्थापित की। पहला समाचार पत्र जिसका नाम दि बंगाल गजट था, 1779 में जेम्स अगस्टस हिक्की द्वारा प्रकाशित किया गया। यह अंग्रेजी भाषा का पहला समाचार पत्र था जो कोलकाता से प्रकाशित हुआ। बंगाल से 1818 में समाचार दर्पण नामक पहला स्थानीय भाषा का समाचार पत्र प्रकाशित किया गया। स्वतंत्रता से पूर्व हमारे देश में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में फोटो के प्रकाशन को विशेष महत्व नहीं मिला। 20 वीं शताब्दी के आरंभ में समाचार पत्र और पत्रिकाओं में चित्र प्रकाशित किए जाने लगे। ईस्ट इंडिया कंपनी ने इन समाचार पत्रों के प्रकाशन पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिए। 1947 में जब देश अजाद हुआ तो समाचार पत्रों को अपने विकास के लिए अनुकूल वातावरण मिला। आज भारतीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में समाचारों के साथ फोटो के प्रकाशन को महत्व दिया जा रहा है और उनकी तुलना विश्व के किसी भी समाचार पत्र या पत्रिका से की जा सकती है।

भारत में भी फोटो पत्रकारिता में महिलाओं ने पहल की। भारत की पहली महिला पत्रकार होमी वयारवाला थीं। इनके अतिरिक्त भारत के प्रमुख फोटो पत्रकारों में एस. पाल, एन. तियागराजन, किशोर पारिख तथा रघुराज के नाम उल्लेखनीय हैं।

फोटो पत्रकारिता की आवश्यकता एवं उपयोगिता : मनुष्य को सीखने तथा अपने ज्ञान विस्तार करने की हमेशा से आकांक्षा रही है। मनुष्य ने नई चीजें देखीं उसके चित्र बनाए या अपनी यात्रा का वृत्तांत लिखा। इसके बाद मुद्रण आया। मुद्रण लिखित शब्दों को लोगों के बीच में ज्यादा लोकप्रिय कर सकता था। मुद्रित शब्द हाथ से बनी तस्वीरों के साथ होते थे।

हर व्यक्ति अपनी जिज्ञासा को पूरा करना चाहता है। हर व्यक्ति की जिज्ञासा की पूर्ति पत्रकारिता करती है। जैसे समाजशास्त्री को सामाजिक व्यवस्था के बारे में जानकारी देती है, साहित्यकारों को साहित्यिक जानकारियाँ देती है और व्यापारियों को आर्थिक जानकारियाँ देती है। जिस प्रकार किसी पौधे के जीवन के लिए पानी, खाद और वायु की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार व्यक्ति और समाज के विकास के लिए पत्रकारिता की आवश्यकता है। पौराणिक युग में जो स्थान और महत्व नारद मुनि का था, वही स्थान और महत्व आज के समय में पत्रकारिता का है। उस समय नारद मुनि ही खबरें देवताओं को दिया करते थे। आज वही काम पत्रकारिता का है। पत्रकारिता एक प्रकार से सूचना देने वाला 'मौसमी पक्षी' होता है। एक दिन समाचार पत्र के न आने पर पूरा समाज व्याकुल हो जाता है। प्रजातांत्रिक देशों में

तो समाचार-पत्रों को लोकसभा का स्थायी अधिवेशन कहा गया है। यानि इसे चौथा स्तंभ माना गया है। विद्यालंकार ने पत्रकारिता को '5वाँ वेद' माना है। कहने का आशय है कि पत्रकारिता समाज का अविभाज्य अंग है।

पत्रकारिता और मल्टीमीडिया में दिलचस्प रखने वालों के लिए फोरेंसिक फोटोग्राफी करियर है। अदालतों के लिए एक स्थायी रिकॉर्ड प्रदान करने के लिए, वह एक अपराध स्थल और भौतिक साक्ष्य की प्रारंभिक उपस्थिति दर्ज करता है। मूल रूप से फोटो पत्रकार तस्वीरें लेते हैं जहाँ पर एक अपराध हुआ। उन्हें व्यक्तिगत रूप से दर्दनाक दृश्यों का अनुभव करने और दुनिया के सामने आने वाले पल को पकड़ने का मौका मिलता है। अपराध दृश्य फोटोग्राफरों को हर चीज की तस्वीर लेनी चाहिए और विवरण के लिए अच्छी नज़र रखनी चाहिए। इसे अदालत में सबूत के रूप में इस्तेमाल करने की आवश्यकता पड़ सकती है। सबूत को छूने और छेड़-छाड़ करने का मौका मिलने से पहले सभी तस्वीरें होनी चाहिए। ऐसी कई चीजें हैं जिनका एक फोटोग्राफर फोटो खींच सकता है। उदाहरण के लिए पीड़ित का शरीर या टूटे शीशे शामिल हो सकते हैं। उन्हें एक पीड़ित के घायल होने की तस्वीर लेने के लिए भी कहा जा सकता है जो जीवित है और जिसपर हमला किया गया।

खेल फोटो पत्रकारिता : खेल आयोजन समाचार पत्रों का एक बड़ा भाग होता है। इसमें ऐसे फोटो पत्रकार भी हैं जो खेलों के छायांकन के विशेषज्ञ होते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि खेल फोटोग्राफी विशेषीकृत कौशल तथा उपकरण की माँग करती है। आजकल के फोटो पत्रकार ऐसे भी हैं जो किसी एक खेल के विशेषज्ञ होते हैं। उदाहरणार्थ भारत में बहुत से फोटोग्राफर हैं जो क्रिकेट फोटोग्राफी के लिए समर्पित हैं क्योंकि क्रिकेट भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय खेल है, जो साल भर दिन हो या रात खेला जाता है।

युद्ध फोटो पत्रकारिता : यह फोटो पत्रकारिता का आरम्भिक रूप है। फोटो पत्रकार युद्ध कवर करते थे तथा लड़ाई के मैदान से तस्वीरें भेजते थे। भारत में हम समाचार पत्रों में देश के भीतर के युद्ध जैसे आतंकी गतिविधियाँ या दंगों की तस्वीरें देखते हैं जहाँ फोटोग्राफर खतरनाक परिस्थितियों में होता है तथा अपने जीवन को खतरे में डालकर हमें तस्वीरें उपलब्ध कराता है।

ग्लैमर फोटो पत्रकारिता : फिल्मी सितारे तथा अन्य प्रसिद्ध व्यक्तित्व समाचार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए क्योंकि अधिकांश लोग प्रसिद्ध तथा संपन्न लोगों के जीवन में झाँककर देखना चाहते हैं। अनेक फोटो पत्रकार हैं जो इस तरह की फोटोग्राफी में विशेषज्ञ हैं। इन्हें पापरैजी भी कहा जाता है। यह इटैलियन भाषा का शब्द है। फोटो पत्रकारिता का आशय उन तात्कालिक घटनाओं को कवर करने से है जिनसे दिन-प्रतिदिन की खबरें बनती हैं, जैसे राजनैतिक गतिविधियाँ, अपराध, दुर्घटनाएँ आदि। वस्तुतः यह सर्वाधिक सुलभ तथा सामान्य प्रकार की फोटो पत्रकारिता है जो फोटो पत्रकार के लिए सबसे ज्यादा माँग वाली भी है।

यात्रा फोटो पत्रकारिता : इस तरह की फोटो पत्रकारिता में किसी क्षेत्र के भौगोलिक सौन्दर्य, निवासी, संस्कृति, परम्पराएँ तथा इतिहास का दस्तावेज तैयार किया जाता है। यात्रा फोटोग्राफ व्यावसायिक तथा

शौकिया दोनों तरह के फोटोग्राफरों द्वारा लिए जाते हैं। शौकिया लोगों द्वारा खींचे हुए फोटोग्राफ इंटरनेट के माध्यम से मित्रों, रिश्तेदारों आदि से फोटोशेयरिंग बेबसाइट द्वारा एक-दूसरे को सुलभ होते हैं।

वन्य जीवन व फोटो पत्रकारिता : यह फोटो पत्रकारिता चुनौतीपूर्ण रूपों में से एक माना जाता है। फोटोग्राफी उपकरणों के साथ-साथ जानवरों के व्यवहार की अच्छी समझ तथा क्षेत्र की समझ वन्य जीवन फोटोग्राफ लेने के लिए आवश्यक है।

फोटो पत्रकारिता का महत्व और गुण : फोटो पत्रकारिता अब केवल समाचार पत्रों तक ही सीमित नहीं रह गई है। समाचार के स्रोत के रूप में इंटरनेट के उभार के साथ ही फोटो पत्रकारिता का क्षेत्र वेब पत्रकारिता तक विस्तारित हो गया है। ये वेबसाइटें भी पत्रकारों तथा फोटो पत्रकारों को अपने संगठन हेतु समाचार एकत्र करने के लिए नियुक्त करती हैं। फोटो पत्रकार दो प्रकार के होते हैं- पहला जो समाचार पत्र में वेतनभोगी कर्मचारी होता है और दूसरा जो स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं तथा अपनी तस्वीरें समाचार पत्रों एवं समाचार समितियों को भेजते हैं।

फोटो पत्रकारिता के गुण : पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा ही आधुनिक समाज सामूहिक जानकारी और दृष्टिकोण का निर्माण करता है और भविष्य का मार्ग सुगम बनाता है। सामान्य पाठक के ज्ञानवर्द्धन, रुचि, वस्तु स्थिति के चित्रण, जनमत निर्माण में पत्रकारिता का विशेष महत्व है। एक सफल फोटो पत्रकार में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है-

- एक अच्छा फोटो पत्रकार बनने के लिए यह जरूरी है कि उसमें एक संवाददाता के सभी गुण मौजूद हों और उसे अपने विषय में दक्षता हासिल हो।
- वह हर दिन नए विषय पर काम करे।
- विचारों की मौलिकता एवं नवीनता प्रभावशाली फोटो पत्रकार के लिए अधिक जरूरी है।
- कैमरे के सभी कल-पुर्जों के ज्ञान के साथ-साथ डार्करूम में भी काम करना जानता हो।
- किसी भी विचार या घटना को चित्र के रूप में सोचना ही अच्छे फोटो पत्रकार की पहचान है।
- फोटो पत्रकार का विश्वास पात्र सिर्फ कैमरा होता है। इसलिए फोटो पत्रकार में दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास होना चाहिए।
- फोटो पत्रकार निडर, धैर्यशील, जुझारू व संघर्षशील हो तभी वह दंगों, हिंसा, संघर्ष, युद्धों व प्राकृतिक आपदाओं को कैमरे में कैद कर सकता है।
- फोटो पत्रकार के लिए समय बड़ा महत्वपूर्ण होता है। वह समय के साथ होड़ करता है। समय उसकी प्रतीक्षा नहीं करता है। समय का पाबन्द होना मुख्य गुण है।
- फोटो पत्रकार को सच्चाई और ईमानदारी के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। फोटो

पत्रकार को प्रेस सम्बन्धी कानूनों का ज्ञान होना बहुत जरूरी है।

फोटो पत्रकारिता और कानून

- फोटो पत्रकार अपने फोटोग्राफ के माध्यम से जनता को सूचनाएँ देने का कार्य करता है। वह भी अन्य संवाददाताओं के समान प्रभावी नियमों व प्रतिबंधों से अनुशासित होता है। निषेधों का उल्लंघन करने वाले पत्रकार, संपादक, प्रकाशक, स्वामी और मुद्रक आदि सभी को न्यायालय से दण्डित किया जा सकता है।
- स्वत्वाधिकार कानून 1991 पर आधारित फोटोग्राफी के स्वत्वाधिकार सम्बन्धी जानकारी इस प्रकार है - किसी भी रूप में प्रतिलिपि करना फोटो पत्रकारिता पर भी लागू है, क्योंकि यह कानून द्वारा बंधित है।
- फोटो खींचने के साथ ही स्वत्वाधिकार बन जाता है। फोटोग्राफ पर स्वत्वाधिकार शब्द लिखना आवश्यक नहीं।
- फोटोग्राफ की पुनः प्रस्तुति का अधिकार ही स्वत्वाधिकार है।
- फोटो का मूल नेगेटिव बनने के उपरांत पचास साल तक उस पर स्वत्वाधिकार रहता है।
- किसी भी स्वत्वाधिकारविहीन वस्तु का फोटो लिया जा सकता है तथा ऐसे फोटो पर नियमानुसार फोटो पत्रकार या उसके नियोक्ता का स्वत्वाधिकार होता है। वास्तुकला कृतियों में स्वत्वाधिकार होता है।
- अपने खर्चे पर खींचे गए फोटोग्राफों पर वह व्यक्ति स्वयं स्वामी बन जाता है। बशर्ते वे फोटोग्राफ किसी के आदेश अथवा किसी नियोक्ता के अधीन रहते हुए न खींचे गए हो।
- स्वत्वाधिकार के उल्लंघन के किसी भी अभियोग में जिम्मेदारी प्रतिवादी की है कि वह सिद्ध करें कि उसने अपराध नहीं किया है।
- फोटोग्राफों के स्वत्व का अधिकार पूरा या टुकड़ों में बेचा जा सकता है।
- फोटो पर स्वत्वाधिकार प्राप्त स्वामी की अनुमति के बिना उस फोटो की नकल करना उसके स्वत्वाधिकार का उल्लंघन है।
- फोटोग्राफों पर स्वत्वाधिकार ग्राहक का नहीं होगा, भले ही उसके लिए उसने भुगतान क्यों न किया हो।
- अनुमति के बिना यदि किसी ने फोटो का प्रकाशन कर दिया हो तो उल्लंघनकर्ता को दण्ड देने की सामान्य परिपाटी यह है कि उससे उचित दर की दुगुनी कीमत वसूल की जाए।

- फोटोग्राफर द्वारा ग्राहक के आदेशानुसार जो नेगेटिव तैयार किए जाते हैं वे कानून के अनुसार उसकी सम्पत्ति है, लेकिन ग्राहक के आदेश या स्वीकृति के बिना वह उनका उपयोग नहीं कर सकता।

फोटो पत्रकारिता : चुनौती और सुझाव : फोटो पत्रकार को हमेशा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रतिकूल स्थितियों, समय, सुविधा व साधन की फिक्र किए बिना ही उसे समय सीमा में तस्वीरें समाचार पत्रों को भेजनी होती हैं। मुद्रण तकनीक व डिजिटल तकनीक की नई चुनौतियों से जूझते हुए उन्हें तत्काल घटना स्थल की तस्वीरें मोडेम, कंप्यूटर तथा उपग्रह नेटवर्क के माध्यम से दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक फोटो भेजनी होती है। फोटो में सम्पूर्णता, संप्रेषणीयता, विषय वस्तु की स्पष्टता जरूरी है। कलात्मकता, सृजनशीलता व संवेदनशीलता जैसे गुण भी बहुत ही आवश्यक हैं जो एक अच्छे फोटो पत्रकार की सफलता की कुंजी है। फोटो पत्रकार को खुद कार्य अति सावधानीपूर्वक करना पड़ता है। फोटो पत्रकार कैमरे में जो कैद करता है वह हमेश के लिए सुरक्षित हो जाता है। फोटो जर्नलिस्ट विशेष कवरेज, प्राकृतिक आपदा, जंग, ग्लैमर वर्ल्ड और ऐसी ही अनेक घटनाओं को पूरी कहानी समेत अपने कैमरे में कैद करता है। ऐसे कवरेज को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में बहुत सम्मान मिलता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का युग जब तक नहीं आया था, फोटो जर्नलिस्ट एक कैमरा पर्सन की तरह काम करता था, लेकिन इलेक्ट्रॉनिक और वेब मीडिया के आने के बाद इनकी एक अलग पहचान बनी। किसी भी खबर के लिए फोटो की भूमिका प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों में उल्लेखनीय है। कुशल व प्रशिक्षित फोटो जर्नलिस्ट मीडिया इंडस्ट्री में हाथों-हाथ लिए जाते हैं। अखबार और चैनलों के अलावा मैगजीनों आदि में भी फोटो जर्नलिस्ट की काफी माँग रहती है।

"As photo journalist, we supply information to a world that is overwhelmed with pre-occupations and full of people who need the company of images.... We pass Judgement on what we see, and this involves an Enormous responsibility."

- HENRI CARTIER BRESSON

Old No.216/3, New No.68/1, Peria Subbannan Street, K.K. Pudur, Coimbatore - 641038 (TN)

प्रचारक तथा परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए...

परीक्षा प्रमाण पत्र संबंधी जानकारी तथा अन्य सभी आवश्यक विवरण प्राप्त करने के लिए केंद्र सभा के परीक्षा विभाग का **Whats App No. 8124333004** उपलब्ध है।

- परीक्षा सचिव

विस्मृति भी आवश्यक है...

- तंगिराला जयराम

हर एक मानव को जीवन में कई प्रकार की क्रियाएँ करनी पड़ती हैं। उनमें स्मरण करना एक मानसिक प्रक्रिया है। इसका वास्तविक अर्थ है याद करना। इससे बीती हुई बातें या भविष्य में होनेवाले विभिन्न विचारों को क्रमबद्ध किया जाता है। स्मरण करने से मन में एक प्रकार का मानसिक संघर्ष उत्पन्न हो जाता है, क्योंकि इस स्मरण को साकार कर लिया जाता है या मन में ही दबा लिया जाता है। सामान्यतः स्मरण करने मात्र से ही संकल्प सिद्धि होती है। अन्यथा मन खाली-सा लगता है। कभी-कभी अपने जीवन काल में घटी हुई अनेक घटनाओं को एक शृंखला की तरह मानस पटल पर देखा जा सकता है। जब स्मरण करना अनिवार्य हो जाय तो उससे संबंधित कार्य, लक्ष्य तथा रास्ते का चयन आदि निर्धारण करना कष्ट-सा प्रतीत होता है। सामान्यतः सभी के मन में एक दुविधा उत्पन्न होती है कि कार्य का फल क्या होगा! वह कार्य अच्छे से संपन्न होगा या नहीं। कार्य का फल पहले से ही सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है।

यदि किसी भी कार्य का परिणाम अच्छा दिख पड़ता है तो प्रफुल्लित होकर कहते हैं कि यह पल अविस्मरणीय है जो जीवन भर स्थिर भाव से रह जाएगा। यदि परिणाम का फल बुरा हो तो व्यक्ति अपने मन में उसके प्रति घृणा भाव तथा नकारात्मक भाव पैदा करता है। यह विचार बिलकुल सराहनीय नहीं है, क्योंकि कार्य परिणाम अच्छा हो या बुरा हो दोनों को समान रूप से अपनाना चाहिए। अतः परिणाम पर अनुमान या शंका न करते हुए अपने कार्य में अग्रसर होना ही सही माना जाएगा।

लक्ष्य की पूर्ति के लिए भी अच्छा स्मरण सहायक सिद्ध होता है, क्योंकि अच्छा स्मरण ही अच्छा लक्ष्य निर्धारित करता है। उससे ही अपना कार्य आधारित होता है। बिना लक्ष्य के आगे बढ़ना अर्थात कटी पतंग की तरह इधर-उधर भटकना है। अतएव सही राह का चयन करना होगा। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सही रास्ता अर्थात 'राजमार्ग' माना जाएगा। यदि लक्ष्य की पूर्ति में भिन्न रास्ते का चयन हो जाए तो जीवन भर संघर्षपूर्ण वातावरण बन जाता है। इसलिए कहा जाता है कि मन चंगा तो कटौती में गंगा।

मन चंचल होता है। उसे वश में कर लेना सबके बस की बात नहीं है। यद्यपि उसे निरंतर अभ्यास से वश में कर लेना होगा। कारण जो भी हो, जीवन में कुछ क्षण ऐसे आ जाते हैं जैसे कि स्मरण से बढ़कर विस्मरण ही अच्छा लगता है। स्मरण के दायरे में पड़कर मानसिक संघर्ष का सामना करना या उससे झेलने के लिए पूर्ण रूप से तैयार न होना ही एक प्रकार का लाभ-सा महसूस होता है। विस्मरण से मन प्रशांतचित्त-सा लगता है। साथ ही, बाह्य जगत से मुक्त प्रतीत होता है। ऐसे में सुख-शांति युक्त वातावरण में विचरण करने की इच्छा होती है।

विस्मरण भी स्मरण के लिए एक प्रकार का कारक है, क्योंकि स्मरण की मात्रा मनःपटल पर सुनिश्चित रह जाने के लिए विस्मृति काफी मात्रा में सच्ची भूमिका निभाती है। विस्मरण ही स्मरण के लिए

प्रेरितकर्ता होता है, जो मन में स्थायी रूप से मोती के जैसे चमक उठने के लिए निरंतर सहभागी बना रहता है। कहने का तात्पर्य है कि स्मरण और विस्मरण दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

स्मरण व विस्मरण दोनों ही मानसिक क्रियाएँ हैं। जहाँ स्मरण सकारात्मक है, वहीं विस्मरण एक नकारात्मक पक्ष है। गेल्डार्ड ने विस्मरण को एक नकारात्मक स्मृति माना है। जब पूर्व सीखे गए अनुभवों को किसी कारण से खो देते हैं तो उसे विस्मरण की संज्ञा दी जाती है। जब व्यक्ति किसी चीज़ या विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करता है, तो उसे स्मृति चिह्न के रूप में मस्तिष्क में धारण करता है। जब स्मृति चिह्न कमजोर पड़ जाते हैं, तो उसका विस्मरण हो जाता है। जीवन को सुख-शांति से जीने के लिए स्मृति के साथ-साथ यह विस्मृति भी आवश्यक है।

D.No. 23-5-20, Vandhanapu Vari Street, S. N. Puram, Vijayawada - 520011

कविता

जीवन भर पढ़ो

एम. लावण्या

पढ़ो, पढ़ो, पढ़ो,
पढ़ते रहो
हर क्षण, हर दिन
खूब पढ़ो, पढ़ते-पढ़ाते रहो।
जीवन भर पढ़ो,
पढ़ते ही रहो।
पुस्तकें पढ़ो, ज्ञान बढ़ाओ
व्यक्ति को पढ़ो, विवेक बढ़ाओ
सुख-दुख पढ़ो, अनुभव प्राप्त करो
परीश्रम करो, आलस्य त्यागो
हार-जीत को समान रूप से
देखने की दृष्टि रखो
स्थितियों के सामने न झुको
धैर्य रखो, अधैर्य को दूर भगाओ
अपने चारों ओर रोशनी फैलाओ
अंधेरे को मिटाओ
हँसी-खुशी जीवन-यापन करो
रो-रोकर समय व्यर्थ न करो
मुश्किलों का सामना करो
चुनौतियों को स्वीकारो
अस्वीकार करने की प्रवृत्ति से
अपने आप को बचालो
प्रशंसा सुनकर अभिमान न करो
निंदा सुनकर मायूस न हो
अपने आपको सुधारने की कोशिश करो
जीवन जन्म-मरण का बंधन है
हरि का नाम ही शाश्वत है
मन के मलिन को धो डालो
मन को स्वच्छ और निर्मल बना डालो
सन्नाटे को चीरती आवाज
दहशत में है सारा गाँव
अकेलापन करता है धरती पर वास
संगति से दूर भगाओ तन्हाई के पल
प्यार के बीज बोकर
नफरत को उखाड़ फेंको
हर क्षण, हर दिन
विश्वास से आगे बढ़ो
जीवन भर बढ़ो, बढ़ते रहो।

M.A. Final Year, Post Graduate and Research Institute, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Chennai - 600017

लघुकथा

पहचान

- डॉ. सुपर्णा मुखर्जी

गला सूखा जा रहा है पर शरीर में जैसे जान ही न हो, आँखें खुलने को तैयार नहीं। प्यास है कि पानी के बिना बुझने को तैयार नहीं। कुछ मिनट यूँ ही खुद के साथ जद्दोजहद करने के बाद ऋचा झटके से उठ बैठने को तैयार ही हुई कि मुँह से ओह माँ! निकल गया। याद आया उसे एक सप्ताह भी तो नहीं हुआ है उसके ट्यूमर का ऑपरेशन हुए। नींद ही अच्छी थी, खुमारी में खाली प्यास सता रही थी। आँख खुली तो शरीर से भी ज्यादा मन का दर्द सताने लगा। बच्चेदानी निकाल फेंकना पड़ा। नहीं, बाँझ नहीं है। वह एक प्यारी सी बिटिया है लेकिन अब परिवार को कुलदीपक किसी हालत में वह नहीं दे सकेगी। पानी पीते-पीते उसने अनुभव किया कि पानी का स्वाद नमकीन हो गया है। ग्लास को पास ही के टेबल पर रखकर सोने के लिए फिर से आँख बंद की तो कल वाली लेडीज़ परफ्यूम की खुशबू उसके चारों ओर मंडराने लगी, जो निखिल के शर्ट से आ रही थी। खाली कलवाली लेडीज़ परफ्यूम नहीं करीबन 11 साल से अलग-अलग न जाने कितनी खुशबुओं को उसने सूँघा था।

सब जैसे उसे मुँह चिढ़ाने लगीं, सब जैसे उसपर हँस रही थीं। जैसे कह रही हों अब उसका कोई अस्तित्व ही नहीं। उसका कोई अस्तित्व नहीं इस घर में। यह तो बहुत पहले ही वह समझ चुकी थी। पर, मन मानता नहीं था। आँख बंद करना मुश्किल हो गया। जैसे-तैसे कपड़े समेटकर ऋचा टेबल के पास गई अपनी बनाई पेंटिंग्स को देखती रही। ज़माना हो गया कैंवास, रंग, तूलिका - इनको छुए हुए। घर-गृहस्थी उसी में तो रमी हुई थी वह। अब बस यही घर-गृहस्थी! गृहस्थ का मालिक सब आराम से सो रहे हैं उसे अकेला छोड़कर। शरीर की तकलीफ शायद थोड़ी कम हो जाती अगर सिरहाने बैठकर कोई यूँ ही बालों को सहला देता। उसे अपनी ही सोच पर हँसी आ गई। फिर वहीं बैठकर लकीरें खींचते-खींचते बना डाली परफ्यूम की बोतलें। शीर्षक दिया अपने बनाये चित्र को 'यह मैं नहीं'। रात बीत चुकी थी। आँखें जल रही थीं ऋचा की - सोने के कारण नहीं, पर मन बहुत शांत था।

Hindi Lecturer, Bhavan's Vivekananda College, Sainikpuri, Secundrabad - 500094

संप्रेषण सिद्धांत में श्रोता को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इस सिद्धांत में विचार को भाषा में परिवर्तित करने में जहाँ वार्तालाप का परिवेश महत्वपूर्ण है, जहाँ वक्ता का आशय, वक्ता के संदेश का अभिप्राय, जैसे स्वीकार, नकार प्रश्न, असहमति आदि भी उतना ही महत्वपूर्ण हैं। संप्रेषण इस बात पर ही निर्भर करता है कि वक्ता के स्वर का स्वरूप कैसा है। वस्तुतः यह बात अत्यंत महत्वपूर्ण है और द्वितीय भाषा शिक्षण के संदर्भ में यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

- रमानाथ सहाय

परीक्षोपयोगी : राष्ट्रभाषा

रवींद्रनाथ ठाकुर की जीवनी

- एच. कांतिमति

जन्म : रवींद्रनाथ ठाकुर का जन्म सन् 1861 में कोलकाता के एक बहुत ही संपन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम देवेन्द्रनाथ ठाकुर था। वे बड़े विद्वान और त्यागी पुरुष थे। रवींद्रनाथ के कई भाई-बहन थे। उनके परिवार के लोग कला और साहित्य प्रेमी थे।

पढ़ाई : रवींद्रनाथ की प्रारंभिक शिक्षा कोलकाता में हुई। मगर उनका मन पढ़ने में नहीं लगता था। वे प्रकृति के पुजारी थे। उनके पिता साहित्य प्रेमी होने के कारण घर में सदा विद्वानों तथा कवियों का जमघट रहता था। उनसे ठाकुर बहुत सी बातें सीख लेते थे। स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद वे कॉलेज की पढ़ाई के लिए लंदन गए।

साहित्य में रुचि : विलायत में भी उनका मन नहीं लगा। वे भारत लौटकर आ गए। उन्हें बचपन से ही साहित्य में रुचि थी। आठ वर्ष की आयु में ही उन्होंने कविता लिखना शुरू कर दिया था। उन्होंने अंग्रेज़ी के कुछ नाटकों को बंगला में अनुवाद किया था।

लोकप्रिय रचना : गीतांजली उनकी लोकप्रिय रचना है। इस रचना के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार भी मिला। नोबेल पुरस्कार पानेवाले भारत के सर्वप्रथम व्यक्ति रवींद्रनाथ ठाकुर ही थे। राष्ट्रगान 'जन, गण, मन अधिनायक जय हे' के रचयिता भी वे ही हैं।

संस्था : उन्होंने सन् 1901 में बोलपुर के पास शांतिनिकेतन नामक एक संस्था स्थापित की। यहाँ पढ़ने-लिखने के अलावा नृत्य, संगीत, चित्रकला आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। विदेशों से भी छात्र-छात्राएँ यहाँ अध्ययन करने और कलाएँ सीखने के लिए आने लगे। रवींद्रनाथ ठाकुर ने साहित्य की अपूर्व सेवा की। वे 7 अगस्त, 1941 को स्वर्ग सिधारे। उनके निधन के बाद शांतिनिकेतन एक विश्वविद्यालय के रूप में परिणत हुआ।

S-10, Jayakrishna Apartments, Old Township Road, Ambattur, Chennai - 600053

कविता

बापू जी

एम. कल्याणी

भाग्य विधाता बापू जी
युग निर्माता बापू जी
भारत नेता बापू जी
स्वातंत्र्य दाता बापू जी

हिन्दी प्रचार करने हेतु
दक्षिण में सुत को भेजा था
तुम्हारी यह प्रचार सभा
फूल फल कर छाया देती
हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए
प्राणार्पण कर अमर हुए हो ।।भाग्य ।।

सत्य अहिंसा शस्त्र बनाकर
वंदेमातरम् महामंत्र बनाकर
साधुजनों को वीर बनाकर
धीरज धारण करके तुमने
घोर स्वातंत्र्य महायुद्ध में
लड़कर जीत पायी हो ।। भाग्य ।।

हरिजनोद्धार करने के लिए
छूआछूत मिटाने के लिए
सर्वधर्म समभाव का सबक
हमें सिखाने के लिए
इस जग में तुम जन्मे हो
सच-सा मार्ग दिखाने के लिए ।। भाग्य ।।

6/301, II Floor, Mugappair East,
Chennai - 600037

कविता

देवतुल्य माता-पिता

- डॉ. दिलीप धींग

सदा पूजनीय देवतुल्य जो, श्रद्धा के आधार हैं।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।

दुर्लभ मानव जीवन हमने उनकी खातिर पाया है।
प्रथम गुरु वे और उन्होंने सद्गुरु से मिलवाया है।
सद्गुरु से भी पहले जिनका बहुत-बहुत उपकार है।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

जिनकी गोदी में, हाथों में; खेले, पले और बड़े हुए।
जिनके ही आशीर्वादों से, दुनिया में हम खड़े हुए।
जन्मदाता, जीवनदाता, का करते सत्कार है।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

बने सन्तान सुयोग्य इसी में, अपना चित्त लगाया है !
रात-रात भर जाग-जाग कर, सोया भाग्य जगाया है।
सन्तान के सुख की खातिर, झेला कष्ट अपार है।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

बच्चों की शिक्षा-दीक्षा पर हुआ समर्पित जिनका क्षण-क्षण।
उनके उपकारों से उपकृत, जीवन और जगत का कण-कण।
उनके होने से खिल उठता, घर-आँगन परिवार है।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।

मात-पिता की त्याग तपस्या, क्या जानें नादान बिचारे।
देखो! उन्हें सताकर कितने, भटक रहे किस्मत के मारे!
उन्हें तिरस्कृत करने वालों को मिलता धिक्कार है।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

उसने बोला, वे ऐसे हैं; उसको मैंने बोला, देखो!
कैसे भी हैं, माँ-बाप हैं, उनका आदर करना सीखो।
उनसे ही पाया तुमने यह, जीवन झिलमिल हार है।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।

जो नहीं मात-पिता का होता, वह कब किसका होता है?
अपने ही कंधों पर अपना, अभिशप्त जीवन ढोता है।
हो जाते ऐसे व्यक्ति के, बन्द पुण्य के द्वार हैं।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

मात-पिता की सेवा में जो व्यर्थ हिसाब-किताब लगाते।
जीवन की सुन्दर बगिया में, फूल छोड़कर शूल उगाते।
नहीं व्यापार जिन्दगी मित्रो! रिश्तों का संसार है।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

पूछें उनके हाल-चाल हम बतियाएँ, कुछ समय बिताएँ।
कर्ज चुकाएँ, फर्ज निभाएँ, नहीं कभी एहसान जताएँ।
उनकी आज्ञा, सेवा-भक्ति से जीवन गुलजार है।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

माता-पिता हमारे कारण, कभी न लज्जित होने पाएँ।
करें साधना ऐसी हम कि उनका मन हर्षित हो जाए।
अच्छे काम हमारे उनकी खुशियों के आधार हैं।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

माँ धरती, ममता की मूरत, पिता अनुशासन का नाम।
पावन दिल के देवालय में दोनों ही श्रद्धा के धाम।
वात्सल्य का निर्झर हैं, वे उत्सव हैं, त्योहार हैं।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

आगम उपनिषद् रामायण, जिनका गाते गौरव-गान।
राम, कृष्ण और महावीर भी, जिनका करते थे सम्मान।
सचमुच ! माता और पिता की महिमा अपरम्पार है।
नमस्कार उन मात-पिता को करते बारम्बार हैं।

7, Ayya Mudali Street, 1st Floor, Sowcarpet, Chennai - 600001

कविता

अ आ इ ई.... गाओ!

- डॉ. प्रभु किंग

अभी समय है, इसे व्यर्थ न गवाएँ।
आओ यह जीवन सफल बनाएँ।

इधर-उधर की, छोड़ सभी कुछ।
ईश्वर से भक्ति, करो कभी कुछ।

उर तल में कुछ, सुंदर गुण भर लो।
ऊपर वाले की कृपा को भर लो।

ऋषि मुनि से, सब बातें अच्छी।
एक राह तू चुन ले जो सच्ची।

ऐसी-वैसी नहीं, जो नेक राह हो।
ओम मंत्र का, उर में वास हो।

और का कोई, भले ही न साथ हो।
अंग प्रत्यंग, ये स्वस्थ साथ हो।

अः! यह कितना, सुंदरतम होगा।

कभी किसी को, कष्ट न होगा।
खले अगर कुछ, तो सह लेना।
गलत कभी ये, निर्णय न लेना।
घबराएँ जब, प्रभु नाम जपना।

अंगारों पे भले, तुम्हें हो चलना।

चलता रहे, यह जीवन सुखमय।
छल-कपट से, दूर रहें, निर्भय।
जग है सुंदर, यहाँ खुश रहें सब।
झगड़े-झँझट से, दूर रहें सब।

'इयाँ' इयाँन, अच्छी छोटी गाड़ी।
टलती भला, जब चलें पिछाड़ी।

ठहरो, सोचो, क्या है करना?
डरना है या, गर्व से है रहना।
ढलें उगें जैसे, गगन में प्रभाकर।

तरना चाहें, यदि ये भवसागर।
थम के रहें, शक्ति भ्रम न करना।
दम प्रभु भक्ति में, लगा रखना।
धन कुछ लगे, निर्धन की सेवा में
नर ही नारायण है, उस सेवा में।

परमात्मा का रूप, उसे भी जानें।
फरिश्ता बन, दुःख दर्द पहचानें।
बनें मसीहा उनके, आशीष पाएँ।
भक्त व भक्तवत्सल बन जाएँ।
मन में सुख शांति, हमेशा पाएँ।

यहीं स्वर्ग है धरा पे, यहीं नरक है।

रब कम दे, ज्यादा दे, क्या फर्क है?
रहो प्रेम से, मेरा तो यही तर्क है।
लब पे हो नाम केवल प्रभु का।
वही करेगा, बेड़ा पार सब का।

सत्य राह पर ही, हरदम चलना।
षड्यंत्रों से दूर, सदैव ही रहना।
शराफत, ईमान में पहचान बनें।
हरदम केवल, एक नेक इंसान बनें।

क्षमा भावना, रखना श्रेष्ठ प्रदर्शन।
त्रय प्रभु की कृपा का हो दर्शन।

ज्ञप्ति बनाए, ज्ञानी बनें हर जन।
ज्ञानी बन ज्ञान देता मन।

Plot No. 57, 58, Sri Arunachala Nagar, Near Chennai Amirta College, Aathur, Chengalpattu - 603101

'सूर्योदय' की पात्र परिकल्पना

- आर. प्रिया

'सूर्योदय' नामक इस एकांकी के एकांकीकार कमलाकांत वर्मा हैं। वे हिंदी नाटक क्षेत्र में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

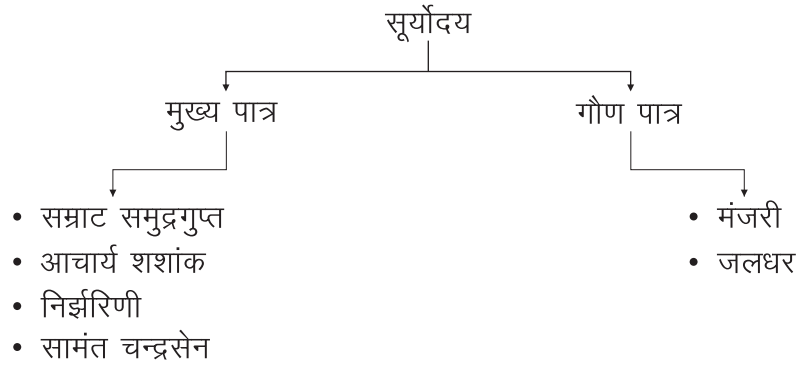

सम्राट समुद्रगुप्त : सूर्योदय के पात्रों में सम्राट समुद्रगुप्त मुख्य पात्र हैं। समुद्रगुप्त भारतवर्ष के सम्राट थे। उनकी राजसभा लक्ष्मी और सरस्वती के वरदपुत्रों से समृद्ध थी। वे बड़े कलाप्रिय होने के कारण उनकी राजसभा विभिन्न कलाओं के कला रत्नों से अलंकृत थी। इतना आदर पाकर कलाकार फूले न समाते थे।

आचार्य शशांक : सूर्योदय का नायक आचार्य शशांक हैं। वे अनुपम गायक हैं। वे जलधर से बात करते हुए एक अच्छे कलाकार की परिभाषा ऐसे देते हैं - 'सच पूछो तो ईश्वर के इस जघन्य प्रतिद्वंद्वी को अपदस्थ कर, मानवता को वास्तविक ईश्वर दर्शन के मार्ग में खींच लाना कलाकार के जीवन का मुख्य औचित्य है।' अर्थात वास्तव में मंदिर में जो ईश्वर की मूर्ति है वह प्रतिद्वन्द्वी (मुकाबला करनेवाला) मात्र है। लोगों को सच्चाई समझना और उनको वास्तविक ईश्वर दर्शन के मार्ग पर लाना एक कलाकार का कर्तव्य होता है।

सामंत चन्द्रसेन शशांक से मिलकर कहता है कि सम्राट समुद्रगुप्त ने शशांक को राजसभा का रत्न बनाया है। चन्द्रसेन का मानना था कि यह बात सुनकर शशांक खुश हो जाएँगे, मगर कला को राजा से बढ़कर माननेवाले शशांक रत्न बनने से इनकार कर देते हैं। उनका विश्वास है कि कला का प्रदर्शन ईश्वर को आनन्दित करने के लिए होना चाहिए। राजा या महाराजा के मनोविनोद के लिए कला का प्रदर्शन हो तो वह कला और कलाकार के लिए अपमान की बात है। लेकिन सम्राट इसे अपने लिए अपमान की बात समझ लेते हैं। वे चाहते हैं कि कलाकार हो या कोई और, राजा के कहे अनुसार ही चले। ऐसा नहीं करने पर वे शशांक को मृत्यु दण्ड देते हैं। राजाज्ञा का उल्लंघन करनेवालों को दंड देने के नियम के अनुसार विवश होकर उनको ऐसा करना पड़ा। इसके लिए वे बहुत दुखी होते हैं।

इससे पता चलता है कि आचार्य शशांक सच्चे अर्थ में कलाकार हैं और सत्याग्रही भी। उनका प्रधान

अस्त्र अहिंसा है। यहाँ महात्मा गाँधी का स्मरण हो आना स्वाभाविक है।

निर्झरिणी : निर्झरिणी नामक एक नर्तकी अपनी सहेली मंजरी से बातें करती है। दोनों के बीच सम्राट समुद्रगुप्त की सभा के कला रत्न बनने के बारे में बात चलती है, जो इस प्रकार है - 'महत्व सौन्दर्य का नहीं, मूल्य का है। रत्न इसलिए रत्न नहीं है कि प्रकृति ने उसे वैसा बनाया है, किंतु इसलिए कि संसार उसे समझता है।' मंजरी इसे सौभाग्य की बात कहती है, मगर निर्झरिणी रत्न बनना पसन्द नहीं करती। इतने में वहाँ सम्राट समुद्रगुप्त का सामंत चंद्रसेन आकर कहता है कि सम्राट ने उसे कला-रत्न बनाया है। कला रत्न के रूप में चुने जाने पर निर्झरिणी खुश नहीं होती। वह कहती है कि राजा की इस कृपा के बदले अब उसको कई लोगों के सामने नाचना होगा, अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन करना पड़ेगा, कला का मधु पिलाकर सबको मदहोश करना पड़ेगा। वह यह नहीं चाहती। मगर एक स्त्री होने के कारण उसको कला रत्न बनना स्वीकार करना ही पड़ता है।

निर्झरिणी की नम्रता : इसके बाद निर्झरिणी सम्राट समुद्रगुप्त की सभा में जाती है और नृत्य करती है। सब उसका नृत्य देखकर मुग्ध हो जाते हैं। इन बातों से हमें यह पता चलता है कि निर्झरिणी नृत्य करने में निपुण है। सम्राट उसको भेंट के रूप में एक हार प्रदान करते हैं। निर्झरिणी नतमस्तक होकर हार स्वीकार लेती है और सम्राट का अभिनंदन करती है। यहाँ हमें निर्झरिणी की नम्रता का पता चलता है।

सम्राट का मन परिवर्तन : चन्द्रसेन शशांक को सम्राट के सामने उपस्थित करता है। सम्राट समुद्रगुप्त उनको मृत्यु दण्ड देते हैं। आचार्य शशांक बंदीगृह में जाते हैं। निर्झरिणी जेल में शशांक से बात करके लौटती है। उसी वक्त बन्दीगृह में सम्राट भी आते हैं। तब आचार्य स्वर-साधन कर रहे होते हैं। सम्राट को अकस्मात उनके स्वर सुनने का मौका मिलता है। सम्राट पूरी तरह प्रभावित हो जाते हैं। उनका दिल बदल जाता है। अब उनके दिल में राजसी सत्ता का गर्व नहीं है। आचार्य शशांक को मुक्त कर दिया जाता है। आचार्य शशांक अपने सत्याग्रह में सफल होते हैं। आत्मसम्मान, निडरता, नम्रता, नए चिंतन से भरे शशांक सच्चे अर्थ में कलाकार हैं।

उद्देश्य : इस एकांकी से यह स्पष्ट होता है कि कलाकरों की कला ईश्वर को अर्पण करने के लिए ही है।

34, Lakeshore Apts., Block 3, S2, 3rd Main Road, Chitlapakkam, Chennai - 600064

कविता की भाषा के गठन में सबसे अधिक बल इसपर दिया जाता है कि इसमें शब्द का अपव्यय नहीं होना चाहिए और कहीं भी कोई चीज अप्रयोजन या अनावश्यक नहीं होनी चाहिए। इसीलिए जिसे हम कविता का अन्वयार्थ (पैराफ्रेज) कहते हैं वह वस्तुतः अन्वयार्थ न होकर कविता के परस्पर संबद्ध अर्थ का ठीक-ठाक विपर्यय होता है। इस तथाकथित अन्वयार्थ में वह सब कुछ छूट जाता है जो कविता में जुड़ा हुआ है और उससे ऊपर वे दूसरी चीजें आरोपित हो जाती हैं जो कविता की दृष्टि से व्यर्थ हैं।

(विद्यानिवास मिश्र, रीतिविज्ञान, पृ.69-70)

आलेख

गाँधी जयंती : 'हिंद स्वराज'

- डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा

1909 में गुजराती में लिखी गई 'हिंद स्वराज' महात्मा गाँधी (02 अक्टूबर, 1869-30 जनवरी, 1948) की पहली पुस्तक है। पाठक और संपादक की संवाद शैली में लिखी गई इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद 'हिंद स्वराज्य' नाम से नवजीवन संस्था ने प्रकाशित किया। 1893 में गाँधी दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया। बाद में वे 1909 में ट्रांसवाल डिप्यूटेशन के साथ लंदन गए थे। वहाँ उनकी मुलाकात कुछ स्वराज्य प्रेमी भारतीय नवयुवकों से हुई। गाँधी जी ने उनसे तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों, हिंदुस्तान की दशा, उसकी आजादी की संभावनाएँ, शिक्षा, सत्य, अहिंसा और स्वराज जैसे अनेक मुद्दों पर चर्चा की। चार महीने के बाद वापस दक्षिण अफ्रीका लौटते समय उन्होंने किलडोनन कैसल पर मात्र दस दिनों (13 - 22 नवंबर, 1909) में उस बातचीत से संदर्भित विचारों को प्रश्नोत्तर शैली में 'हिंद स्वराज' के रूप में लिपिबद्ध किया।

गाँधी जी ने 'हिंद स्वराज' के उद्धेश्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है - 'उद्धेश्य सिर्फ देश की सेवा का और सत्य की खोज करने का और उसके मुताबिक बरतने का है।' पुनः 1921 में इस पुस्तक का सार प्रस्तुत करते हुए उन्होंने लिखा कि - '1909 में यह लिखी गई थी। इसमें मेरी जो मान्यता प्रकट की गई है, वह आज पहले से ज्यादा मजबूत बनी है। मुझे लगता है कि हिंदुस्तान 'आधुनिक सभ्यता' का त्याग करेगा, तो उससे उसे ही लाभ होगा। इस किताब में जिस स्वराज्य की तस्वीर मैंने खड़ी की है, वैसा स्वराज्य कायम करने के लिए आज मेरी कोशिशें चल रही हैं। मैं जानता हूँ कि अभी हिंदुस्तान उसके लिए तैयार नहीं है। ऐसा कहने में शायद ढिठाई का भास हो, लेकिन मुझे तो पक्का विश्वास है कि इसमें जिस स्वराज्य की तस्वीर मैंने खींची है, वैसा स्वराज्य पाने की मेरी निजी कोशिश जरूर चल रही है। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि आज मेरी सामूहिक (आम) प्रवृत्ति का ध्येय तो हिंदुस्तान की प्रजा की इच्छा के मुताबिक पार्लियामेंटरी ढंग का स्वराज्य पाना है। मेरी यह छोटी सी किताब इतनी निर्दोष है कि यह बच्चों के हाथ में भी दी जा सकती है। यह द्वेष धर्म की जगह पर प्रेम धर्म सिखाती है; हिंसा की जगह आत्म-बलिदान स्थापित करती है और पशुबल के खिलाफ टक्कर लेने के लिए आत्मबल को खड़ा करती है।'

तत्कालीन परिस्थितियों, विचारों और तर्कों को गाँधी जी ने 'हिंद स्वराज' (94 पृष्ठ) में दो परिशिष्टों सहित 'सुधार का दर्शन', 'हिंदुस्तान की दशा', 'हिंदू-मुसलमान', 'वकील और डॉक्टर', 'सत्याग्रह', 'पढ़ाई', 'मशीनें' और 'छुटकारा' शीर्षक 20 छोटे-छोटे अध्यायों में संजोया है। प्रथम अध्याय में पत्रकारों की आचार संहिता के बारे में विचार प्रकट करते हुए उन्होंने पत्रकारिता की कसौटियों को स्पष्ट किया है। इस अध्याय के अंत में उन्होंने यह लिखा है कि 'कांग्रेस ने अलग-अलग जगहों पर हिंदियों को इकट्ठा करके उनमें 'हम एक प्रजा है' ऐसे जोश पैदा किया।' यहाँ पर प्रयुक्त शब्द 'हिंदियों' वस्तुतः

'हिंदुस्तानियों' का वाचक है।

गाँधी जी मशीनी सभ्यता के खिलाफ थे क्योंकि वे मानते थे कि मशीनें मनुष्य का रोजगार छीनकर उसे भूखों मरने के लिए मजबूर करती हैं- 'मशीनें यूरोप को उजाड़ने लगी हैं और वहाँ की हवा अब हिंदुस्तान में चल रही है। यंत्र आज की सभ्यता की मुख्य निशानी है और वह महापाप है ऐसा मैं तो साफ देख सकता हूँ। बंबई की मिलों में जो मजदूर काम करते हैं, उनकी हालत देखकर कोई भी काँप उठेगा। जब मिलों की वर्षा नहीं हुई थी तब वे औरतें भूखों नहीं मरती थीं।' गाँधी जी के इन विचारों को भले आज अक्षरशः स्वीकारना कठिन प्रतीत हो, लेकिन इस दृष्टि से ये आज भी प्रासंगिक हैं कि आज मनुष्य यांत्रिक पुर्जा बन गया है। गाँधी जी का स्वराज्य इस मशीनी सभ्यता से मुक्ति प्राप्त करने पर जोर देता है। 'हिंद स्वराज' की असली अवधारणा को उन्होंने एक वाक्य में समेटा है- 'हम अपने ऊपर राज करें वही स्वराज्य है, और वह स्वराज्य हमारी हथेली में है।'

'हिंद स्वराज' में अन्यत्र गाँधी जी ने स्वराज्य के बारे में अपने विचार यों व्यक्त किए हैं - 'स्वराज्य तो सबको अपने लिए पाना चाहिए और सबको उसे अपना बनाना चाहिए। माँगने से कुछ नहीं मिलेगा, यह तो खुद लेना होगा।' उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि एक हद तक स्वराज्य में अंधाधुंधी को बरदाशत कर सकते हैं लेकिन परराज्य को नहीं क्योंकि परराज्य हमारी बरबादी का सूचक है।

बापू ने अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' के माध्यम से भारतीय जनता ही नहीं, बल्कि विश्व के तमाम लोगों के सामने जीवन की कसौटियों को रखा है। उनका स्वराज्य केवल राजनैतिक स्वाधीनता तक सीमित नहीं है। जीवन के हर क्षेत्र में, धर्म, सत्य और अहिंसा का साम्राज्य देखना ही उनका सपना था। अतः वे लिखते हैं- 'मेरा मन गवाही देता है कि ऐसा स्वराज्य पाने के लिए यह देह समर्पित है।' गाँधी जी का 'हिंद स्वराज' 114 साल पहले भी प्रासंगिक था, आज भी प्रासंगिक है और कल भी रहेगा, इसमें दो रायें नहीं हैं। ब्रिटिश शासन की गुलामी से तो भारत आजाद हुआ लेकिन आज तक वह 'स्वराज' प्राप्त नहीं हुआ जिसका सपना महात्मा गाँधी ने देखा था। बापू हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई में कोई भेदभाव नहीं करते थे। उनके अनुसार तो 'हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई जो इस देश को अपना वतन मानकर बस चुके हैं, वे एक-देशीय, एक-मुल्की हैं, वे मुल्की-भाई हैं।'

मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास अर्थात् सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा अत्यंत जरूरी है। मातृभाषा का महत्व स्पष्ट करते हुए गाँधी जी लिखते हैं - 'हमें अपनी भाषा में ही शिक्षा लेनी चाहिए। सबसे पहले तो धर्म की शिक्षा या नीति की शिक्षा होनी चाहिए। हरेक पढ़े-लिखे हिंदी को अपनी भाषा का, हिंदू को संस्कृत का, मुसलमानों को अरबी का, पारसी को फारसी का और सबको हिंदी का ज्ञान होना चाहिए।'

बापू ने 'हिंद स्वराज' के 'परिशिष्ट' में ब्रिटिश सांसद जे.सी. मोर का उद्धरण अंकित किया है जिससे भारत के स्वभाव का पता चलता है- 'हमने पाया कि भारत एक प्राचीन सभ्यता है जो वहाँ हजारों

सालों से रह रही अतिशय बुद्धिमान जातियों के चरित्र का अंग बन चुकी है। उस सभ्यता ने भारत को राजनैतिक संरचना तो दी है, समाज और परिवार के जीवन को चलाने वाली अनेकों विविधतापूर्ण और संपन्न संस्थाएँ भी दी हैं। अपनी इन संस्थाओं के कारण हिंदू जाति का चरित्र उन्नत है। वे कुशल व्यापारी हैं, बुद्धिमान, विचारशील और समीक्षाबुद्धि से संपन्न हैं, कमखर्च हैं, उदार हैं, संयमी हैं, धर्म पर चलने वाले और नियमों को मानने वाले हैं। मधुर व्यवहार वाले हैं, दयालु हैं, विपत्ति में धैर्यशील हैं और माता-पिता की आज्ञा मानने वाले हैं।'

इस पुस्तक के प्रारंभ में दी गई प्रस्तावना बहुत ही महत्वपूर्ण है। सात प्रस्तावनाओं में दो काकासाहब कालेलकर की हैं, दो महादेवभाई की और तीन महात्मा गाँधी की हैं। काकासाहब ने 'दो शब्द' में लिखा है कि 'इस अमर किताब का स्थान तो भारतीय जीवन में हमेशा के लिए रहेगा ही।' महादेवभाई ने 'उपोद्धात' के अंत में लिखा है- 'सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के स्वीकार से अंत में क्या नतीजा आएगा, उसकी तस्वीर इसमें है।'

महात्मा गाँधी द्वारा लिखित प्रस्तावना को पढ़ने के बाद यह स्पष्ट होता है कि किस परिस्थिति में बापू को 'हिंद स्वराज' लिखने की प्रेरणा हुई- 'जब मुझसे रहा ही नहीं गया तभी मैंने यह लिखा है। बहुत पढ़ा, बहुत सोचा। विलायत में ट्रांसवाल डेप्युटेशन के साथ मैं चार माह रहा, उस बीच हो सका उतने हिंदुस्तानियों के साथ मैंने सोच-विचार किया, हो सका उतने अंग्रेजों से भी मैं मिला। अपने जो विचार मुझे आखिरी मालूम हुए, उन्हें पाठकों के सामने रखना मैंने अपना फर्ज समझा।'

Associate Professor, PGRI, DBHPS-Madras, T.Nagar, Chennai - 600017

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, परीक्षा विभाग
मद्रास शहर के प्रचारकगण कृपया ध्यान दें।
जनवरी 2024 की परिचय परीक्षा संबंधी सूचना (मद्रास शहर के लिए मात्र)

परिचय परीक्षा के आवेदन पत्र सभा के वित्त विभाग के रसीद के साथ या परिचय परीक्षा शुल्क ऑनलाइन में जमा करके, जमा विवरण (रसीद) आवेदन पत्र के साथ परीक्षा विभाग में सुपुर्द कर सकते हैं।

- परीक्षा शुल्क - रु. 210
- चालू प्रमाणित प्रचारक अनुदान - रु. 30/-
- परीक्षा शुल्क भरने की अंतिम तारीख - 15.11.2023
- विलंब शुल्क सहित परीक्षा शुल्क भरने की अंतिम तारीख - 25.11.2023

- परीक्षा सचिव

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras-17.
Examination Department

परीक्षा क्रम सं./ Exam. Roll No. | |

मध्यमा-1 / MADHYAMA–1

समय : 2½ घंटे | **अगस्त - 2023**

Name of the Centre : .... Translation in ....
Name of the Student: ....

सूचना :– 1. परीक्षार्थी अपना नाम और केन्द्र का नाम लिखें। 2. दिये गये स्थान पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
3. उत्तर-पुस्तक में से काग़ज़ नहीं फ़ाड़ना चाहिए। 4. पेंसिल या लाल स्याही से उत्तर नहीं लिखना चाहिए।
5. सब प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में ही (देवनागरी) लिखें। 6. अतिरिक्त काग़ज़ नहीं दिया जाएगा।

Signature of the Student **परीक्षा सचिव**

परीक्षक के उपयोगार्थ

1. **परीक्षक लाल स्याही से जाँच करें।**
2. **अंकों का जोड़ करते समय सावधानी बरतें।**
3. **उचित स्थान पर प्राप्तांक अवश्य दर्ज करें।**

100

परीक्षक के हस्ताक्षर

1. किसी एक पद्यांश का भावार्थ हिन्दी में लिखिए :--

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) "पंडित की संगति करने से दूर मूर्खता हो जाती
पर चालाकों की संगति से बुरी चाल है आ जाती।
सुनो, उदाहरण ये सब हमको सीख यही हैं सिखलाते
जो जैसी संगति करते हैं, वे वैसा हैं फल पाते।।"

....
....
....

(2) कैंची नहीं हाथ में तेरे
कटी पत्तियाँ न्यारी हैं।
रंग नहीं हाथों में तेरे
फूल रंगे बलिहारी हैं।।

....
....
....

(3) यह कहाँ अभी तक लुप्त रहा,
दिन उगने पर भी सुप्त रहा,
किस अंधकार में गुप्त रहा
फिर प्रकट हुआ दिन जहाँ ढला,
क्षण में बन इन्द्रधनुष निकला।

2. किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए :--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) बुरे कैसे भले बन जाते हैं?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(2) लकड़ी कोयला कैसे हो जाती है?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(3) 'एक बूँद' कविता का उद्देश्य क्या है?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(4) तारे आकाश में कैसे लटक रहे हैं?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(5) वनमाली की करामत क्या-क्या हैं?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(6) इंद्रधनुष में कितने लोकों की छवि है?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(7) स्कूल से छुट्टी होने पर होनहार बालक कहाँ जाते हैं?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(8) होनहार बालक छोटे बच्चों को क्या सिखाते हैं?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

3. **किसी एक कविता का सारांश लिखिए :--**

कुल अंक	14	प्राप्तांक	

(1) संगति का फल (2) अद्‌भुत माया (3) होनहार

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4. **किन्हीं दो पद्‌यों का कंठस्थ रूप ज्यों का त्यों लिखिए :--**

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) गुरु गोविंद ..... (2) विद्या धन .....
..... दियो बताय।। .....की पौन।।

(3) आवत ही .....
..... बरसे मेह।।

5. **किन्हीं पाँच का अर्थ हिन्दी में लिखिए :--**

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) पसंद करना ..... (2) स्वीकार करना ..... (3) गुज़रना .....
(4) शिखर ..... (5) चमत्कार ..... (6) अत्याचार .....
(7) धुन ..... (8) द्‌योतक ..... (9) छाप .....
(10) ख्याति .....

6. **किन्हीं पाँच का विलोम शब्द लिखिए :--**

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) आदर x ..... (2) सुपुत्र x ..... (3) आरंभ x .....
(4) उपयुक्त x ..... (5) बिगाड़ना x ..... (6) मुर्दा x .....
(7) भाग्यवती x ..... (8) उचित x ..... (9) बढ़िया x .....
(10) मृत्यु x .....

7. **जोड़े बनाइए :--**

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) बीरबल रसोई घर में -- देश की संपत्ति मानी जाती है। .....
(2) पांडिच्चेरी में भारती ने -- सेनापति का गौरव .....
(3) चारों दिशाएँ -- खाना पका रहा था। .....
(4) बैल और गाय -- कई तरह के कष्ट भोगे। .....
(5) झंड़ा सत्याग्रह -- तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। .....

8. किन्हीं पाँच का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) होशियारी .....

.....

(2) नींव डालना .....

.....

(3) बहुभाषी .....

.....

(4) लाभान्वित.....

.....

(5) संपादक .....

.....

(6) बुलंदियों को छूना.....

.....

(7) खुदवाना .....

.....

(8) बहादुर .....

.....

(9) व्याकुल .....

.....

(10) विरुद्ध .....

.....

9. गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :--

कुल अंक	6	प्राप्तांक	

"सन् 1900 से गोधरा में फ़ौजदारी के मुकद्दमों की प्रैक्टिस करने लगे। शीघ्र ही उन्हें बहुत ख्याति मिल गई। उन्हीं दिनों उनकी पत्नी बीमार हो गई। सरदार पटेल उन्हें शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) के लिए मुंबई में छोड़कर वकालत के कार्य में लग गए। एक दिन जब वे अदालत में फ़ौजदारी के एक मुकद्दमे की पैरवी में व्यस्त थे तभी उन्हें एक तार मिला। उसे पढ़कर उन्होंने जेब में रख लिया और मुकद्दमे की पैरवी करने लगे। सब काम समाप्त कर लेने के बाद ही उन्होंने मित्रों को बताया कि तार में पत्नी की मृत्यु का समाचार था। विपत्ति में धैर्य और साहस बनाए रखने का इससे बढ़कर और क्या उदाहरण हो सकता है। पत्नी की मृत्यु के समय वल्लभ भाई की आयु केवल 33 वर्ष की थी। उन्होंने आजीवन दूसरा विवाह नहीं किया।

(1) वल्लभ भाई की पत्नी कहाँ बीमार पड़ी?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(2) वल्लभ भाई ने अपनी पत्नी को शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) करने के लिए कहाँ दाखिल किया?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(3) पटेल ने अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार कब दूसरों को सुनाया?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

10. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में लिखिए :--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) बादशाह ने बीरबल से क्या पूछा और बीरबल ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(2) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(3) डॉ. अब्दुल कलाम के व्यक्तिगत जीवन के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(4) कपिलवस्तु की सीमा पर सेवक छंदक और सिद्धार्थ के बीच संपन्न संवाद को संक्षेप में लिखि :-

उत्तर/Answer .....

.....

.....

(5) स्वतंत्र भारत में पटेल जी की सेवाएँ क्या-क्या थीं? (या) क्यों पटेल को "लौह पुरुष" कहते हैं?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

11. किसी एक पाठ का सारांश लिखिए :--

कुल अंक	15	प्राप्तांक	

(1) बीरबल की चतुराई (2) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

(3) हमारा राजचिह्न (4) सरदार वल्लभ भाई पटेल

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

12. **किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए :--**

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) लिपि किसे कहते हैं ?

उत्तर/Answer .....

.....

(2) हिंदी वर्णमाला में कितने स्वर और व्यंजन हैं ?

उत्तर/Answer .....

.....

(3) स्वरों का प्रयोग कैसे होता है ?

उत्तर/Answer .....

.....

(4) व्यंजन किसे कहते हैं ?

उत्तर/Answer .....

.....

(5) कथित या लिखित भाषा का मूल आधार क्या है ?

उत्तर/Answer .....

.....

(6) अनुस्वार किसे कहते हैं ?

उत्तर/Answer .....

.....

(7) हल् या हलंत चिह्न व्यंजन में कहाँ लगाया जाता है ? उदाहरण दीजिए।

उत्तर/Answer .....

.....

(8) १ से ५ तक देवनागरी अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप लिखिए।

उत्तर/Answer .....

.....

~ ~ ~ ~ ~

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras-17.
Examination Department

परीक्षा क्रम सं./ Exam. Roll No. ____________

मध्यमा-2 / MADHYAMA–2

समय : 2½ घंटे — अगस्त - 2023

Name of the Centre : .... Translation in ....

Name of the Student : ....

सूचना :- 1) परीक्षार्थी अपना नाम और केन्द्र का नाम लिखें। 2) दिये गये स्थान पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 3) उत्तर-पुस्तक में से काग़ज़ नहीं फ़ाड़ना चाहिए। 4) पेंसिल या लाल स्याही से उत्तर नहीं लिखना चाहिए। 5) हिन्दी से मातृभाषा में अनुवाद प्रश्न को छोड़कर बाकी सभी प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में ही (देवनागरी लिपि) लिखें। 6) अतिरिक्त काग़ज़ नहीं दिया जाएगा।

Signature of the Student — **परीक्षा सचिव**

परीक्षक के उपयोगार्थ

1. परीक्षक लाल स्याही से जाँच करें।
2. अंकों का जोड़ करते समय सावधानी बरतें।
3. उचित स्थान पर प्राप्तांक अवश्य दर्ज करें।

परीक्षक के हस्ताक्षर

100

1. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :--

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) इब्राहिम को क्यों गर्व हो गया ?

उत्तर/Answer ....

....

....

....

(2) भगीरथ के कुल और गुण के बारे में लिखिए।

उत्तर/Answer ....

....

....

....

(3) शिवप्पा और गौरी का घर नरक-सा क्यों बना ?

उत्तर/Answer ....

....

....

....

(4) चतुर आदमी ने अंत में क्या वर माँगा ?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

.....

2. किसी एक कहानी का सारांश लिखिए :--

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) भगवान सबका एक है ! (2) कुत्ते की पूँछ (3) मौन ही मंत्र है !

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :--

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) दशरथ के कितने पुत्र थे ? वे कौन-कौन थे ?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

.....

(2) भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के विवाह किन-किनके साथ हुए ?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

.....

(3) महाराज दशरथ ने राज्यभार राम को क्यों सौंपना चाहा ?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

.....

(4) दशरथ ने क्यों प्राण छोड़ दिये ?

उत्तर/Answer .....

.....

.....

.....

4. **किसी एक पाठ का सारांश लिखिए :--**

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) चार-भाई (2) मंथरा का षड्यंत्र (3) भरत मिलाप (4) पादुका पट्टाभिषेक

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5. **किन्हीं चार का लिंग बदलिए :--**

कुल अंक	4	प्राप्तांक	

(1) बेटा ..... (2) बकरा ..... (3) सास .....

(4) घोड़ा ..... (5) ऊँट ..... (6) कौआ .....

(7) अध्यापक ..... (8) चौधरी ..... (9) कवि .....

(10) विद्वान .....

6. **किन्हीं चार का वचन बदलिए :--**

कुल अंक	4	प्राप्तांक	

(1) लड़का ..... (2) रुपया ..... (3) विद्यार्थी .....

(4) अध्यापक ..... (5) लड़की ..... (6) सड़क .....

(7) लता ..... (8) गुड़िया ..... (9) रानी .....

(10) दुकान .....

7. **किन्हीं चार अंकों को अक्षरों में लिखिए :--**

कुल अंक	4	प्राप्तांक	

(1) 25 ..... (2) 40 ..... (3) 51 .....

(4) 67 ..... (5) 87 .....

8. **वाच्य बदलिए :--**

कुल अंक	4	प्राप्तांक	

(1) जोसफ़ ने यह चिट्ठी लिखी।

उत्तर/Answer .....

.....

(2) राम से रावण मारा गया।

उत्तर/Answer .....

.....

9. **वाक्य जोड़िए :--**

कुल अंक	4	प्राप्तांक	

(1) मुसाफ़िर थक गया। वह आराम करने के लिए लेट गया।

उत्तर/Answer .....

.....

(2) पुलिस आयी। लोग भाग गये।

उत्तर/Answer .....

.....

10. **किन्हीं पाँच वाक्यों का शुद्ध रूप लिखिए :–**

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

(1) यह एक किताब।

उत्तर/Answer .....

.....

(2) मैंने एक रुपया पूछा।

उत्तर/Answer .....

.....

(3) दो दिन के लिए छुट्टी दीजिए।

उत्तर/Answer .....

.....

(4) गांधी जी ने देश को सेवा की।

उत्तर/Answer .....

.....

(5) कुछ पानी दीजिए।

उत्तर/Answer .....

.....

(6) वह नहीं मर गया।

उत्तर/Answer .....

.....

11. **अस्पताल में - डॉक्टर और लड़के की बातचीत लिखिए।**

(या)

किराये के बारे में - टैक्सीवाले और मुसाफ़िर की बातचीत लिखिए।

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

.....

.....

.....

.....

.....

12. **छुट्टी माँगते हुए अपने अध्यापक के नाम पर एक पत्र लिखिए।**

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(या)

कसरत करने की ज़रूरत बतलाते हुए अपने छोटे भाई के नाम पर एक पत्र लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13. **किसी एक शीर्षक पर निबंध लिखिए :–**

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

(1) दीपावली (2) मेरा नगर (3) हमारा देश

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

14. **अपनी प्रांतीय भाषा में अनुवाद कीजिए :--**

कुल अंक	5	प्राप्तांक	

एक बार ख़लीफा उमर यात्रा पर गये। सवारी के लिए उनके पास ऊँट था। उमर ऊँट पर सवार हुए और नौकर ऊँट की नकेल पकड़कर चलने लगा। बड़ी दूर की यात्रा थी। इसलिए उमर ने नौकर से कहा, "देखो, यात्रा तो बहुत लंबी है। थोड़ी दूर मैं सवार हो जाऊँगा, तुम ऊँट की नकेल पकड़कर चलना; फिर थोड़ी दूर तुम सवार हो जाना, और मैं पैदल चलूँगा। क्योंकि खुदा के सामने बादशाह और नौकर सब बराबर हैं।" इस तरह यात्रा पूरी की और शाम को दोनों शहर वापस आये।

.....

.....

.....

.....

.....

15. **हिन्दी में अनुवाद कीजिए :--**

कुल अंक	10	प्राप्तांक	

After Babar had ruled over Delhi for four or five years his dear and the only son fell ill. Inspite of the best treatment his illness became worse and worse. One of the courtiers said, "If you sacrifice one of the things which is dearest to you, he will get well." On this Babar said, "Yes, I am ready to sacrifice my life to save my son."

(अंग्रेज़ी)

தில்லி அரியணையில் அமர்ந்து நான்கைந்து ஆண்டுகளுக்குப் பிறகு பாபருடைய அன்பான ஒரே மகன் ஹுமாயூன் நோயுற்றான். மிகுந்த மருத்துவம் செய்தும் அவனுடைய நோய் அதிகரித்து வந்தது. அரச சபையினரில் ஒருவர் சொன்னார். 'தாங்கள் தங்களுடைய மிக விருப்பமான ஒரு பொருளை துறந்து விடுவீர்களேயானால் தங்களுடைய மகன் குணமடைவான்.' இதன் பின் பாபர் சொன்னார் - 'என்னுடைய அன்பு மகனுக்காக நான் என்னுடைய உயிரையே துறந்துவிடத் தயாராக இருக்கிறேன்'.

(तमिल)

బాబరు ఢిల్లీ సింహాసనము అధిష్ఠించిన నాలుగైదు సంవత్సరముల తరువాత అతని ఏకైక పుత్రుడు హుమాయూన్ జబ్బు పడ్డాడు. శ్రేష్ఠమైన మంచి చికిత్స చేయబడినప్పటికీ అతని జబ్బు పెరుగుతూనే ఉండెను. సభాసదులలో ఒకడు ఇలా అన్నాడు - "మీరు మీకు అత్యంత ప్రియమైన ఏదైన ఒక వస్తువును త్యజించినట్లయితే మీకుమారుడు తప్పక ఆరోగ్యవంతుడౌతాడు." దాని మీదట బాబరు యిలా అన్నాడు - "నేను నా కుమారునికోసం నా ప్రాణాలు అర్పించటానికైనా సిద్ధంగా ఉన్నాను."

(तेलुगु)

ದಿಲ್ಲಿಯ ಸಿಂಹಾಸನ ಏರಿದ ನಾಲ್ಕು ವರ್ಷಗಳನಂತರ ಬಾಬರನ ಪ್ರೀತಿಯ ಹಾಗೂ ಏಕೈಕ ಪುತ್ರನಾದ ಹುಮಾಯೂನ ಅನಾರೋಗ್ಯ ಪೀಡಿತನಾಗಿದ್ದು. ಉನತ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ನೀಡಿದರೂ ಚಿಕಿತ್ಸೆ ಫಲಕಾರಿಯಾಗದೇ ಆರೋಗ್ಯ ಇನಷ್ಟು ಹದಗೆಟ್ಟಿತು. ಆಗ ಆಸ್ಥಾನಿಕರಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ನಿದ್ದು ನಿಂತು "ನೀವು ನಿಮ್ಮ ಅತ್ಯಂತ ಪ್ರೀತಿಯ ಯಾವುದಾದರೊಂದು ವಸ್ತುವನು ತ್ಯಾಗ ಮಾಡಿದರೆ ನಿಮ್ಮ ಮಗನು ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಗುಣಮುಖ ಹೊಂದುವನು" ಎಂದು ಹೇಳಿದನು. ಆಗ ರಾಜನು "ನಾನು ನನ್ನ ಮಗನಿಗಾಗಿ ನನ್ನ ಜೀವವನು ಕೊಡಲು ಸಿದ್ಧ" ಎಂದು ಹೇಳಿದನು.

(कन्नड)

ബാബർ നാലു കൊല്ലം ദൽഹിയിൽ രാജ്യം ഭരിച്ചു. അപ്പോൾ അയാളുടെ പ്രിയപ്പെട്ട ഏകമകൻ രോഗം പിടിപെട്ടു് കിടപ്പിലായി. മേത്തരം ചികിത്സകൾ നടത്തിയിട്ടും രോഗം അനുദിനം വർദ്ധിച്ചുകൊിരുന്നു. ദർബാറിലെ ഒരു സഭാംഗം പറഞ്ഞു--"അങ്ങു് അങ്ങേയ്ക്കു ഏറ്റവും പ്രിയപ്പെട്ട വസ്തുക്കളിൽ ഒന്നു് ഉപേക്ഷിയ്ക്കുമെങ്കിൽ കുട്ടിയുടെ രോഗം മാറും." അതുകേട്ടപ്പോൾ ബാബർ പറഞ്ഞു-- "ഞാൻ എന്റെ സ്വന്തം ജീവൻ എന്റെ മകനുവേി ഉപേക്ഷിയ്ക്കാൻ തയ്യാറാണു്".

(मलयालम)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

~ ~ ~ ~ ~

राष्ट्रभाषा-1
RASHTRABHASHA–1

समय : 2½ घंटे] [पूर्णांक : 100

1. कवि और कविता का नाम बताते हुए किन्हीं दो पद्यांशों का भावार्थ हिन्दी में लिखिए :- 10

(1) मुझे तोड़ लेना 'वनमाली'
उस पथ में देना तुम फेंक;
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।।

(2) जग पीड़ित है अति दुख से,
जग पीड़ित रे! अति सुख से
मानव जग में बँट जावें,
दुख-सुख से औ' सुख-दुख से।

(3) राजहठी ने फेंक दिए सब
अपने रजत - हेम - उपहार
'लूँगा वही, वही लूँगा मैं।'
मचल गया वह राजकुमार।

(4) सम्पूर्ण धरती है माँ
हमारी साँसों की धुरी पर घूमती
जहाँ सबसे पहले फूटे जीवन के अंकुर

(5) जब तक गृहिणी नहीं गेह में गृह भी सूना लगता।
गृहिणी के आते ही वह घर जगमग करने लगता।।
अर्धांगिनि के बिना मनुज भी रहता सदा अधूरा।
कोई कर्म बिना नारी के हुआ न अब तक पूरा।।

2. कवि का नाम बताते हुए किसी एक कविता का सारांश लिखिए :- 10

(1) शुभकामना (2) सुख-दुख (3) खिलौना (4) भारत की नारी

3. किन्हीं दो दोहों का कंठस्थ रूप ज्यों का त्यों लिखिए :- 5

(1) रूखी .....। .....ललचावे जीव।।

(2) धीरे-धीरे .....। .....फल होय।।

(3) खैर, खून .....। .....सकल जहान।।

(4) रहिमन निज .....। .....लहैं कोय।।

4. किन्हीं तीन का भावार्थ हिन्दी में लिखिए :- 5

(1) रहिमन वे नर मर गये, जे कुछ माँगन जाहि।
उनते पहिले वे मुये, जिन मुख निकसत नाहि।।

(2) माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोंहि।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूगी तोहि।।

(3) विद्या धन उद्यम बिना, कहौ जु पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यों पंखे की पौन।।

(4) सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय।।

(5) फरमान से पेड़ों पे कभी फल नहीं लगते।
तलवार से मौसम कोई बदला नहीं जाता।।

(6) बुलन्दियों पे पहुँचना कोई कुशलता नहीं
बुलन्दियों पे ठहरना कमाल होता है।

5. किन्हीं पाँच का अर्थ हिन्दी में लिखिए :- 5

(1) हुक्म (2) जवानी (3) इनकार करना (4) आज़ाद (5) सर्दी
(6) खोज़ना (7) चतुर (8) मुलाकात (9) लालच (10) यकीन

6. किन्हीं पाँच का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :- **10**

(1) दिखाई देना (2) गुलाम (3) आकर्षक (4) लड़ना (5) अविस्मरणीय
(6) प्रणाली (7) प्यास बुझाना (8) समस्या (9) आशीर्वाद (10) हैरान होना

7. निम्न गद्यांश को ध्यान से पढ़कर नीचे दिये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- **5**

"स्वामी विवेकानंद जी का जन्म सन् 1863 ई. में कोलकत्ता में हुआ। बचपन में उनका नाम नरेन्द्रनाथ था। वे बचपन से ही होनहार थे। उन्होंने अंग्रेज़ी स्कूलों में शिक्षा पायी और सन् 1884 ई.में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की। बचपन से ही उनके अंदर एक प्रबल आध्यात्मिक भूख थी"।

(1) स्वामी विवेकानंद का जन्म कब हुआ?
(2) स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम क्या था?
(3) स्वामी विवेकानंद ने बी.ए. डिग्री कब प्राप्त की?

8. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :- **5**

(1) "रुपया" पाठ के लेखक कौन हैं?
(2) गाँधी जी कब से कब तक दक्षिण अफ्रिका में रहे?
(3) कामराज ने देशभक्त के रूप में क्या-क्या त्याग किये?
(4) विवेकानंद ने परमहंस से क्या सवाल किया?
(5) शिवाजी ने अपनी गुरुभक्ति को साबित करने के लिए क्या किया?
(6) एक दिन तेनाली राम की कोठी में कौन घुस आये?

9. किसी एक पाठ का सारांश लिखिए :- **10**

(1) सभ्यता का रहस्य (2) स्वामी विवेकानंद (3) तेनालीराम

10. किसी एक एकांकी का सारांश लिखिए :- **10**

(1) रीढ़ की हड्डी (2) अंधेर नगरी (3) शहीद झलकारीबाई

11. किन्हीं दो पात्रों का परिचय दीजिए :- **10**

(1) जीवनलाल (2) उमा (3) गुरु महंत (4) गुरुदत्त (5) झलकारीबाई

12. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :- **5**

(1) जीवनलाल ने कमला की विदा क्यों नहीं की? (2) 'रीढ़ की हड्डी' किस प्रकार का एकांकी है?
(3) महंत के कितने शिष्य थे? वे कौन-कौन थे? (4) गोविन्दय्या को गुस्सा क्यों आता है?
(5) झलकारीबाई क्या चाहती थी?

13. संदर्भ सहित किन्हीं दो का भाव समझाइए :- **10**

(1) इन मोतियों का मूल्य समझनेवाला यहाँ कोई नहीं है। पानी से पत्थर नहीं पिघल सकता।
(2) "जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।"
(3) अरे, मैं नाहक मारा जाता हूँ। यहाँ बड़ा ही अंधेरा है, गुरुजी। तुम कहाँ हो।
(4) तुम निराले, तुम्हारी मोहब्बत निराली, मोहब्बत करने के तुम्हारे सारे तौर-तरीके निराले हैं यार!
(5) ऐसी स्थिति में चूहे की तरह बिल में घुसे रहने से तो अच्छा है, हम शेर की तरह शत्रु पर टूट पड़ें।

~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~

राष्ट्रभाषा-2
RASHTRABHASHA–2

समय : 2½ घंटे] [पूर्णांक : 100

1. किसी एक कहानी का सारांश लिखिए :- 10

(1) परीक्षा (2) हार की जीत (3) पाँच मिनट

2. किसी एक महान व्यक्ति की जीवनी का सारांश लिखिए :- 10

(1) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (2) नेताजी सुभाषचंद्र बोस

(3) रवींद्रनाथ ठाकुर (4) लाल बहादुर शास्त्री

3. किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :- 10

(1) स्त्री शिक्षा (2) शिक्षा का माध्यम (3) समय का सदुपयोग (4) भ्रमण

4. किन्हीं तीन का भिन्न-भिन्न अर्थों में वाक्यों में प्रयोग कीजिए :- 6

(1) तीर (2) और (3) आम (4) दिया (5) मत (6) उत्तर

5. समानार्थी शब्द लिखिए :- 6

(1) समुद्र (2) तन (3) देश (4) धंधा (5) अखबार (6) आँख

6. वचन बदलिए :- 6

(1) कमरा (2) मंदिर (3) बहू (4) चीज़ (5) सभा (6) उँगली

7. लिंग बदलिए :- 6

(1) बालक (2) बूढ़ा (3) युवक (4) सेठ (5) छात्र (6) भाई

8. किन्हीं तीन वाक्यों का वाच्य बदलिए :- 6

(1) अध्यापक हिंदी बोले। (2) गांधी जी ने देश की सेवा की। (3) सरला ने दो फल खाये।

(4) वह धूप में चल नहीं सकता। (5) नौकर से काम किया जा रहा है। (6) मुझसे सबेरे उठा नहीं जाता।

9. सूचना के अनुसार बदलिए :- 5

(1) मुझे बहुत प्यास लगी है। ('प्यास' के बदले 'प्यासा' का प्रयोग)

(2) अध्यापक के आते ही छात्र उठ खड़े हुए। ('ज्यों ही–त्यों ही' का प्रयोग)

10. किन्हीं दो लोकोक्ति/कहावतों को समझाइए :- 10

(1) ईद के चाँद होना (2) कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर

(3) कुआँ प्यासे के पास नहीं जाता (4) मरी गाय बामन के हाथ

(5) हीरे की परख़ जौहरी जाने

11. प्रान्तीय भाषा में अनुवाद कीजिए :- 5

(अ) कोडैक्कानल की झील बहुत प्रसिद्ध है। इसके किनारे–किनारे बहुत अच्छी सड़कें बनी हुई हैं। मौसम में इसपर सदा भीड़ रहती है। झील पर नावें भी चलती हैं। नाव चलाने में बड़ा आनन्द आता है। कोडैक्कानल में एक वेधशाला भी है। इसमें सूर्य के संबन्ध में विशेष अनुसंधान करने का प्रबन्ध है। कोडैक्कानल में देखने लायक स्थान बहुत–से हैं। सड़क से कोडैक्कानल शहर पहुँचने के पहले 'सिलवर कैसकेड' नामक सुन्दर झरना है। यह सचमुच रजत प्रपात ही है। इसके आसपास सदा दर्शकों की भीड़ लगी रहती है।

(आ) (1) मारनेवाले से जिलानेवाला अच्छा है। 5

(2) रेगिस्तान की यात्रा के लिए उपयोगी होने के कारण ऊँट को 'रेगिस्तानी जहाज़' कहते हैं।

(3) दुनिया की चीज़ों के पीछे दौड़ने से मन की शांति जाती रहती है।
(4) ज्यों-ज्यों पहाड़ पर चढ़ते जाते हैं, त्यों-त्यों हवा में प्राण-वायु की कमी होती जाती है।
(5) कोलंबस धैर्यवान और खोजी-प्रवृत्ति का युवक था।

12. हिन्दी में अनुवाद कीजिए :- **15**

During summer the whole of India is very hot. At that time it is very difficult to do any work. People usually go to the hill stations to escape from the heat. Kodaikanal is a popular summer resort in South India. Many people say that the climate of England and that of Kodaikanal are almost the same. You do not have as much heat at Kodaikanal, as you have at Ooty during the day-time. The temperature at night is also not so cold as at Ooty. The natural scenery of Kodaikanal is just like that of England.

(अंग्रेज़ी)

கோடைக் காலத்தில் இந்தியா முழுவதும் வெப்பம் அதிகம். அப்பொழுது எந்த வேலை செய்வதும் மிகவும் கஷ்டமானது. வெப்பத்திலிருந்து தப்பித்துக் கொள்ள மக்கள் மலைப் பிரதேசங்களுக்கு போவது வழக்கம். கொடைக்கானல் தென் இந்தியாவில் உள்ள மக்கள் விரும்பும் ஒரு கோடை வாசஸ்தலம். கொடைக்கானலின் தட்பவெப்ப நிலை இங்கிலாந்தின் தட்பவெப்ப நிலையை ஒத்தது என்று சொல்லப்படுகிறது. இங்கே பகல் நேரத்தில் உதகமண்டலத்தைப் போல் வெப்பம் இருப்பதில்லை. இரவுகளில் உதகமண்டலத்தைப் போல் அதிகக் குளிரும் இல்லை. கொடைக்கானலின் இயற்கை காட்சி இங்கிலாந்தைப் போன்றது.

(तमिल)

వేశవి కాలములో హిందూదేశమంతటా బాగా ఎండలుండును. ఆ సమయములో ఏ పనిచేయాలన్నా చాలా కష్టము. మామూలుగా ప్రజలు ఈ ఎండలనుండి తప్పించుకొనటానికి కొండ ప్రదేశాలకు పోవుదురు. దక్షిణ హిందూదేశములో కొడైకనాల్ ప్రసిద్ధమైన వేసవి మకాం. ఇంగ్లండు, కొడైకనాల్ వాతావరణములు ఇంచుమించుగా ఒకే మాదిరిగా ఉంటాయని చాలామంది చెప్తారు. పగటిపూట ఊటీలో ఉన్నంత వేడి కొడైకానాల్ లో ఉండదు. రాత్రిపూట కూడా ఊటీలో ఉన్నంత చల్లదనం అక్కడ ఉండదు. కొడైకనాల్ లోని స్వాభావి కమైన ప్రకృతి దృశ్యాలు సరిగా ఇంగ్లండులో మాదిరిగానే ఉండును. **(तेलुगु)**

ಬೇಸಗೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಇಡೀ ಭಾರತದೇಶವೇ ಬಿಸಿಲ ಬೇಗೆಯಿಂದ ಬೇಗುದಿ ಗೊಂಡಿರುತ್ತದೆ. ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಯಾವ ಕೆಲಸಮಾಡುವುದೂ ಬಹಳ ಕಷ್ಟ. ಜನರು ಸೆಕೆಯಿಂದ ತಪ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಪರ್ವತ ಪ್ರದೇಶಗಳಿಗಿ ಹೋಗುತ್ತಾರೆ. ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಕೋಡೈಕಾನಲ್ ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಗ್ರೀಷ್ಮಾವಾಸ. ಎಷ್ಟೋ ಜನರು ಕೋಡೈಕಾನಲಿನ ಹವಾಮಾನ ಮತ್ತು ಇಂಗ್ಲೆಂಡಿನ ಹವಾಮಾನ ಒಂದೇ ತರಹದ್ದೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಕೋಡೈಕಾನಲಿನಲ್ಲಿ ಹಗಲು ವೇಳೆ ಊಟಿಯಲ್ಲಿದ್ದಷ್ಟು ಸೆಕೆಯೂ ಇರುವದಿಲ್ಲ. ರಾತ್ರಿವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ಊಟಿಯಲ್ಲಿದ್ದಷ್ಟು ಚಳಿಯೂ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಕೋಡೈಕಾನಲಿನ ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ದೃಶ್ಯಗಳು ಇಂಗ್ಲೆಂಡಿನ ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ದೃಶ್ಯಗಳಂತೆಯೇ ಇವೆ. **(कन्नड)**

വേനൽക്കാലത്ത് ഇന്ത്യ മുഴുവൻ ഭയങ്കര ഉഷ്ണമായിരിയ്ക്കും. അക്കാലത്ത് എന്തുവേലചെയ്യാനും വളരെ വിഷമമാണ്. ഉഷ്ണത്തിൽനിന്ന് രക്ഷപ്പെടാൻ ആളുകൾ സാധാരണയായി കുന്നിൻ പ്രദേശങ്ങളിലേയ്ക്കു പോകുന്നു. കൊഡൈക്കാനൽ തെക്കേ ഇന്ത്യയിലെ പ്രസിദ്ധമായ ഒരു സുഖവാസ കേന്ദ്രമാണ്. ഇംഗ്ലിലേയും കൊഡൈക്കാനലിലേയും കാലാവസ്ഥ ഒരുപോലെ ആണെന്ന് ചില ആളുകൾ പറയുന്നു. ഊട്ടിയിൽ പകൽസമയം ഉള്ളത്ര ഉഷ്ണം കൊഡൈക്കാനലിൽ നിങ്ങൾക്ക് അനുഭവപ്പെടില്ല. ഊട്ടിയിൽ രാത്രികാലത്തു ഉള്ളത്ര ശീതവും ഇല്ല. പ്രകൃതിദൃശ്യങ്ങൾ ഇംഗ്ലിലേതുപോലെതന്നെ. **(मलयालम)**

~ ~ ~ ~ ~

हिंदी दिवस समारोह संपन्न

चेन्नै, 14 सितंबर, 2023

'हिंदी राष्ट्रभाषा तब बनेगी जब उसे तमिलनाडु का भरपूर सहयोग मिलेगा। जिस प्रकार भक्ति एक आंदोलन बनकर पूरे देश में उभरी और नायनमार तथा आळवार संतों के साथ-साथ आदिगुरु शंकराचार्य एवं रामानंद ने इसे उत्तर में फैलाया, उसी प्रकार हिंदी को संपूर्ण भारत में बिना किसी विरोध के फैलाना होगा। हिंदी को अपनी विश्वसनीयता के लिए अब भी तमिलनाडु का इंतजार है।'

उक्त उद्‌गार यहाँ दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के चेन्नै परिसर में उच्च शिक्षा और शोध संस्थान के तत्वावधान में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में मुख्य अतिथि श्री बी. एल. आच्छा ने व्यक्त किए। इस समारोह की अध्यक्षता उच्च शिक्षा और शोध संस्थान की कुलपति (प्रभारी) डॉ. पी. राधिका ने की। उन्होंने आज की परिस्थितियों में हिंदी की महत्ता को रेखांकित किया तथा यह स्पष्ट किया कि इंटरनेट के कारण ही हिंदी वैश्विक स्तर पर पहुँच चुकी है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, तमिलनाडु के द्वितीय उपाध्यक्ष श्री पी. सुब्रह्मण्यम ने यह याद दिलाया कि हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए दक्षिण भाषा-भाषियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास पूरे दक्षिण में हिंदी का प्रचार-प्रसार 1918 से निरंतर आबाध गति से कर रही है और इसे इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिए।

IQAC के निदेशक डॉ. सुभाष जी. राणे ने हिंदी में रोजगार की संभावनाओं को अकेरा है। सभा के प्रधान सचिव श्री जी. सेल्वराजन ने हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दीं। पी.जी. के विभागाध्यक्ष और कुलसलिव (प्रभारी) डॉ. मंजुनाथ एन. अंबिग ने भारत सरकार के माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह द्वारा दिए गए देश के नाम संदेश का वाचन किया। इस अवसर पर दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना के द्वितीय उपाध्यक्ष श्री एल. मधुसूदन, कार्यकारिणी समिति के सदस्य श्री के. गोपी (केरल), शिक्षा परिषद के सदस्य श्री आर. कृष्णमूर्ति (चेन्नै), श्री एच. बल्लारी (कर्नाटक), राजाजी प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. बी. हुल्लोली, पी.जी. और बी.एड विभाग के सभी प्राध्यापक, छात्र और शोधार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरूआत भरतनाट्यम, सरस्वती वंदना, तमिल ताई वाळ्त्तु तथा सरस्वती दीप प्रज्वलन से हुई। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. जी. नीरजा और डॉ बी. संतोषी कुमारी ने किया तथा डॉ. मृत्युंजय सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गाँधी जयंती और स्वच्छता दिवस समारोह संपन्न

चेन्नै, 02 अक्टूबर, 2023

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के परिसर में गाँधी जयंती और स्वच्छता दिवस समारोह संपन्न हुआ। बतौर मुख्य अतिथि श्री पंकज जी (अतिरिक्त भविष्य निधि आयुक्त, श्रम मंत्रालय, भारत सरकार) ने यह कहा कि गाँधी जी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह मानवतावाद को कायम रखने के सशक्त शस्त्र हैं। हिंदी और गाँधी पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने आगे कहा कि हिंदी ही वह भाषा है जो हमें आपस में बाँधती है।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के पूर्व प्रधान सचिव श्री वी. एस. राधाकृष्णन ने गाँधी जी के साथ जुड़ी अपनी यादों को साझा किया। महात्मा गाँधी विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती पद्मेश्वरी ने स्वच्छ भारत अभियान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें सिर्फ परिवेश को ही नहीं बल्कि आंतरिक मन को भी स्वच्छ रखना चाहिए।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की कोषाध्यक्ष श्रीमती एस. गीता ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए गाँधी जी के विचारों पर प्रकाश डालते हुए सभी को शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर कर्मठ हिंदी प्रचारकों - श्रीमती ए. लक्ष्मी, श्रीमती आर. कांचना और श्रीमती उषारानी का सत्कार किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ गाँधी प्रतिमा को माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन और महात्मा गाँधी विद्यालय के छात्रों द्वारा भजन से हुआ। परीक्षा सचिव श्री एम. जी. गुत्तल जी ने सभी का स्वागत-सत्कार किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नीरजा ने किया तथा डॉ. मंजुनाथ एन. अंबिग ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'YouTube' Channel
प्रचारक बंधुओं के लिए शुभ समाचार

DBHPS, Central Sabha Chennai के नाम से सभा ने अपना **'YouTube'** चैनल शुरू किया है। इसमें सभा संबंधी समाचार, परीक्षा समाचार, समारोह, पाठ्य पुस्तक संबंधी संक्षिप्त विवरण होंगे। आप सबसे विनम्र अनुरोध है कि इस चैनल को 'Like' और 'Subscribe' करें।

Printed by G. Selvarajan General Secratary and published by G.Selvarajan on behalf of Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha (name of owner) G. Selvarajan and printed at Hindi Prachar Press (place of printing) 15-21C Thanikachalam Road, T.Nagar, Chennai-600 017 and published at Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha (place of publication) 15-21CThanikachalam Road, T.Nagar, Chennai-600 017. Editor G.Selvarajan.

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

हिंदी दिवस समारोह : 14 सितंबर, 2023

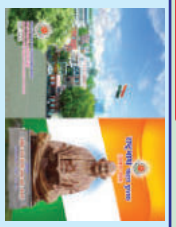

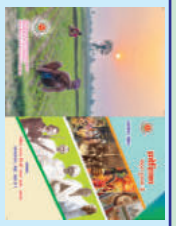

October, 2023. Regd. No. TN/CH(C)/321/2021-2023 **REGISTERED NEWSPAPER**
Licenced to Post without Pre-payment No.TN/PMG(CCR)WPP–432/2021-2023
Posted at Egmore RMS-1; Registrar of Newspaper for India under No. 1089/1957
Date of Publication – First week of every month
Posted at Patrika Channel on Dt. 11 th October, 2023

Hindi Prachar Samachar

To

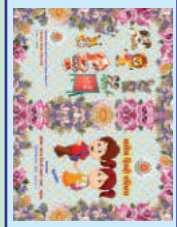

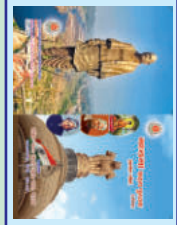

If not delivered, please return to:
Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha,
15-21, Thanikachalam Road, T. Nagar, P.O., Chennai - 600 017.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै - 600 017 की तरफ़ से जी. सेल्वराजन द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित
15-21, तणिकाचलम रोड, टी.नगर, चेन्नै - 600 017 में प्रकाशित एवं मुद्रित। संपादक : जी. सेल्वराजन
Published and Printed by G. Selvarajan on behalf of D.B. Hindi Prachar Sabha, Chennai-600 017.
Published and Printed at 15-21, Thanikachalam Road, T. Nagar, Chennai - 600 017. Editor G.Selvarajan.